शारदा ग्रन्थमाला-6

552

स्वर्गीय पण्डित कृष्ण जू राज़दान
1850–1926 ई.
(साधनारत भक्त एवं कवि)

प्रोफ़ेसर (डा.) भूषण लाल कौल

प्रकाशन विभाग
संजीवनी शारदा केन्द्र
आनन्दनगर, बोडी, जम्मू दूरभाष : 2501480

स्वर्गीय पण्डित कृष्ण जू राज़दान
(1850-1926 ई॰)
(साधनारत भक्त एवं कवि)

प्रोफ़ेसर (डॉ०) भूषणलाल कौल

रत्न पुस्तकालय
55

प्रकाशन विभाग

संजीवनी शारदा केन्द्र

आनन्द नगर, बोड़ी, जम्मू।

सम्पादक मण्डल

मुख्य सम्पादक : प्रोफेसर (डा.) भूषणलाल कौल
सम्पादक त्रय : 1. डा. आर. एल. भट्ट
2. श्री प्रदीप कौल (खोडबली)
3. डा॰ महाराजकृष्ण भरत

© प्रकाशकाधीन सुरक्षित

प्रकाशक

प्रकाशन प्रभाग
संजीवनी शारदा केन्द्र
आनन्द नगर, बोड़ी, जम्मू - 180 002
दूरभाष : 0191-2501480
E-mail : shardakendra31@rediffmail.com

संस्करण : प्रथम 2007 ई. संख्या — 1000

मूल्य :

प्रस्तावना

अपने ही देश के भीतर विस्थापन की यातना सहते हुए अस्तित्व—रक्षाकी समस्या से जूझता जन—समूह अपने विगत इतिहास और सांस्कृतिक परम्परा के शेष बचे स्रोतों की रक्षा के लिय चिन्तित दिखाई दिया, ऐसा होना स्वाभाविक था। भौतिक सम्पदा, घर—द्वार, ज़मीन—जायदाद के खो जाने की उतनी चिन्ता नहीं है जितनी चिन्ता इस बातकी है कि एक अल्पसंख्यक कश्मीरी अपनी पहचान खो रहा है।

प्रश्न यह है कि हज़ारों वर्षों से पल्लवित इस पहचान को कैसे सुरक्षित रखा जा सकता है। आज से केवल एक हज़ार वर्ष पूर्व बहुसंख्यक कश्मीरी आज देश—निष्कामित अल्पसंख्यक के रूप में जानवरों के समान जीवन जीने के लिए विवश हैं।

कश्मीर के इतिहास में यह स्थिति कई बार उत्पन्न हुई है। इसमें सन्देह नहीं कि इतिहास अपने आपको दोहराता है, लेकिन इस संकट—कालीन स्थिति में अपनी पहचान को बनाये रखना न केवल हमारे लिए आवश्यक हे, अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए भी नितान्त आवश्यक है।

संजीवनी शारदा केन्द्र ने इसी उद्धेश्य से एक योजना तैयार की है जिस में कश्मीर के वैभवशाली अतीत के स्वर्णिम पृष्ठों की स्मृति सुरक्षित रखने हेतु इतिहास के यथार्थ को ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर जन—मानस के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि कोई अविवेकी दुस्साहस करके इतिहास के तथ्य को विकृत न कर सके।

कश्मीर संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन का प्रमुख केन्द्र रहा है। हमने महान विभूतियों को जन्म दिया है जिन में वसुगुप्त, सोमानन्द, उत्पलदेव, अभिनवगुप्त, क्षेमेन्द्र, क्षेमराज, बिल्हण, कल्हण, मम्मट, कय्यट, जगद्धर भट्ट, वामन, रुद्रट, उद्भट, आनन्द वर्धन, भामह, जोनराज, श्रीवर, शुक आदि विश्व—विख्यात शैवाचार्य, साहित्यकार, चिन्तक, इतिहासकार और वैयाकरण कश्मीर की भूमि से उपजे देश—रत्न हैं, जिन्हों ने अपने साधनात्मक जीवन का क्रियारत आदर्श स्थापित कर समाज और वर्ग को एक नई दिशा प्रदान की।

कश्मीर के प्राचीन महान तीर्थस्थल, सांस्कृतिक केन्द्र, विद्यापीठ, भव्य मन्दिर और आश्रम, शिवालय एवं शक्ति—स्थल आज ऐतिहासिक साक्ष्य बन कर पुरातत्त्ववेताओं को खोज और अनुसन्धान की प्रेरणा देते हैं।

प्राचीन इतिहास के तेजोमंडित बुद्धिजीवियों, विचारकों, दार्शनिकों, कलाकारों, साहित्यकारों, शासकों और धर्माचारियों के विषय में जन–हित उपयोगी पुस्तिकाओं के लेखन, प्रकाशन और वितरण की योजना तैयार की गई तथा निर्णय हुआ कि नामी लेखकों को इस प्रकार की सामग्री तैयार करने हेतु आमन्त्रित किया जाये और एक–एक प्रतिभा–सम्पन्न विभूति पर अलग से एक–एक पुस्तिका, जिसमें कम से कम 30-40 पृष्ठों पर प्रामाणिक ज्ञानवर्धक, सर्वजनोपयोगी सामग्री दी गई हो, तैयार की जाये। इस प्रकार एक पुस्तिका केवल एक ही व्यक्ति अथवा संस्था से सम्बन्धित रहेगी। पुस्तिका लेखन हेतु लेखक बन्धुओं को नियत पारिश्रमिक देय होगा। पुस्तिका का प्रकाशन संजीवनी शारदा केन्द्र की ओर से होगा और प्रकाशन के सारे अधिकार केन्द्र के पास सुरक्षित रहेंगे।

सर्वसाधारण जनता के लिए कल्याण भावना से प्रेरित होकर यह निश्चित किया गया कि पुस्तिका का मूल्य यथासम्भव न्यूनतम रखा जायेगा ताकि एक सामान्य देशबन्धु के लिए सरलता से सुलभ रहे।

आरम्भ में यह निश्चित हुआ कि अधोलिखित दस विषयों को लेकर विद्वान बन्धुओं को लेखन हेतु आमंत्रित किया जाये — अभिनवगुप्त, क्षेमेन्द्र, श्री भट्ट, परमानन्द, सुय्या, शितिकण्ठ, ऑरिनिमाल, ललितादित्य, आनन्दवर्धन तथा मार्तण्ड मन्दिर, उमानगरी, कृष्ण जू राज़दान, स्वामी अमरनाथ, स्वामी राम, वसुगुप्त, स्वामी लक्ष्मणजू, उत्पलदेव, लल्लेश्वरी, प्रकाशराम, जोनराज, दिदा, कल्हण, कोटा, कश्यप बन्धु, रूपभवानी, प्रेमनाथ भट्ट, अवन्तीवर्मन।
इस में से श्री प्रदीप कौल द्वारा लिखित पुस्तिका 'क्षेमेन्द्र' डा. भरत द्वारा लिखित 'उमानगरी' तथा डा. कौल द्वारा लिखित 'परमानन्द' वर्ष 2005 ई. में प्रकाशित हुए।

लेखक बन्धुओं की ओर से उत्साहवर्धक सहयोग न मिलने के कारण कई कठिनाइयों का सामना करना पडता है। कई अन्य लेखकों के साथ सम्पर्क स्थापित किया गया है और आशा है वर्ष 2007 में तीन अन्य रचनायें प्रकाशित हो जायेंगी।

प्रकाशन उप–समिति के सदस्य भी रचनाओं के प्रकाशन हेतु भरसक प्रयत्नशील हैं। केन्द्र के अध्यक्ष महोदय व्यक्तिगतरूप से इस कार्य–योजना में विशेष रुचि ले रहे हैं।

मुख्य सम्पादक

संजीवनी शारदा केन्द्र

(एक संक्षिप्त परिचय)

शारदा के वैभवशाली स्वरूप की प्रतिष्ठा बनाये रखने हेतु तथा समस्त राष्ट्रभक्तों (विशेष कर विस्थापित देशवासियों) में अपने धर्म, समाज एवं राष्ट्र के प्रति अनुराग एवं कर्तव्यभावना को सुदृढ़ बनाने हेतु 'संजीवनी शारदा केन्द्र' की स्थापना 2 सितम्बर 1995 ई० में शारदाष्टमी के दिन जम्मू क्षेत्र के आनन्दनगर (बोड़ी) में हुई।

माँ शारदा सरस्वती एवं दुर्गा दोनों का पर्याय है। ज्ञान, विवेक एवं विद्या की देवी सरस्वती तथा धैर्य, सामर्थ्य एवं शक्ति की देवी दुर्गा (पार्वती) दोनों शारदा में समाये हैं, अतः एक बार पुनः शारदापीठ (कश्मीर) की गरिमा अद्वितीय रूप में संसार के आकाश में चमक उठे, यही संकल्प 'संजीवनी शारदा केन्द्र' की स्थापना में निहित है। यही संकल्प साकार करने हेतु तथा अपने गौरवशाली पूर्वजों की धरोहर की क्षतिपूर्ति के लिये 'संजीवनी शारदा केन्द्र' ने अपनी गतिविधियां चलाने के लिए कुच्छ कार्यक्षेत्र एवं लक्ष्य निर्धारित किये हैं, यथा —

1. संजीवनी भवन का निर्माण।
2. मुख्य धार्मिक, सांस्कृतिक, एवं सामाजिक उत्सवों का सामूहिक आयोजन।
3. जनहित अभियान के अन्तर्गत व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था।
4. कश्मीर—संस्कृति एवं कश्मीर—इतिहास के संदर्भ में शोध—कार्य तथा शारदा व्यबसाइट की शुरूआत।
5. शारदा—लिपि एवं संस्कृत भाषा का पठन—पाठन।
6. एक भव्य—पुस्तकालय की स्थापना।
7. प्रकाशन प्रभाग की स्थापना।

अपने कार्यक्रमों को सुचारू ढंग से चलाने के लिए आनन्दनगर (बोड़ी) में खरीदे एक भूमि—खण्ड पर शारदा भवन निर्माण के पहले चरण में एक भव्य सभागार का निर्माण हुआ है।

युवावर्ग को स्वावलम्बी बनाने के उद्धेश्य से योजना—बद्ध रूप से कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। केन्द्र को एक बहु—आयामी

संस्थान के रूप में विकसित करने की योजना है। इसी संदर्भ में केन्द्र द्वारा एक–वर्षीय पाठ्यक्रमपर आधारित बिजली – रेडियो – टी. वी का प्राथमिक प्रशिक्षण 100 युवकों को दिया जा चुका है। इस समय ये युवक या तो अपना निजी काम चला रहे हैं अथवा प्रशिक्षण के आधार पर अस्पतालों और उद्योगगृहों में कार्यरत हैं।

केन्द्र के परिसर पर ही युवावर्ग के कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु 'शारदा कम्प्यूटर प्रशिक्षण संस्थान' की स्थापना हुई। यह संस्थान वुयक समाज को भिन्न–भिन्न पाठ्यक्रमों के आधार पर प्रशिक्षण दे रहा है। अभीतक 200 छात्र प्रशिक्षण पा चुके हैं। संस्थान की कार्यशाला में आठ कम्प्यूटर लगे हैं और एक साथ 16 प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण देने की पूर्ण सुविधा उपलब्ध है।

शोध की दिशा में केन्द्र प्रयासरत है। कश्मीरी पण्डितों की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने के उद्धेश्य से पुरातत्त्व, इतिहास, धर्म, दर्शन, भाषा, साहित्य, लिपि, लोक–जीवन और लोक–कलाओं से सम्बन्धित अनुसन्धान कार्य को प्रोत्साहन देकर विशेष कार्यक्रमों एवं विचार– गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है।

केन्द्र द्वारा गठित समाजसुधार एवं संस्कार समिति के अन्तर्गत विशेष धार्मिक संस्कारों को सामूहिक रूपसे सम्पन्न कराने की योजना के अन्तर्गत कई बार सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन केन्द्र द्वारा हुआ है जिनमें 125 बालकों को उपनयन संस्कार से संस्कारित किया गया। भविष्य में भी ऐसे संस्कार समारोह आयोजित कराने की योजना है। कई अज्ञानी संस्कार–भ्रष्ट लोग इस का विरोध कर रहे हैं जो दुर्भाग्यपूर्ण है।

कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत केन्द्र की महोत्सव समिति मुख्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सवोंका सामूहिक आयोजन करती है। मुख्य रूप से 'शारदाष्टमी' (जो केन्द्र का स्थापना दिवस भी है) और महाशिवरात्रि महोत्सवका आयोजन उल्लेखनीय है। इन उत्सवों में समाज के प्रत्येक वर्ग के लोग भाग लेते हैं। इन उत्सवों में प्रसिद्ध विद्वानों एवं सन्त–महात्माओं को आमन्त्रित करके जनता को उनके बहुमूल्य विचार सनुने का अवसर प्रदान किया जाता है। शारदाष्टमी समारोह के अवसर पर एक महायज्ञ रचाने के अतिरिक्त समाज के

प्रति समर्पित किन्ही दो महानुभावों को 'शारदा—पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। अभी तक बारह महानुभावों को पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। प्रति वर्ष महाशिवरात्रि समारोह के अवसर पर केन्द्र की ओर से मुद्रित एक वार्षिक प्रेरणाचित्र (केलेण्डर) जनता को भेंट किया जाता है।

समय—समय पर केन्द्र द्वारा शारदा—लिपि के पठन—पाठन एवं लेखन हेतु कक्षाएँ चलाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त 'संस्कृत—संभाषण' की कक्षाओं की व्यवस्था भी की जाती है।

भारतीय जीवन मूल्यों के प्रचार हेतु उपयोगी साहित्य के प्रकाशन एवं वितरण की व्यवस्था भी केन्द्र द्वारा की जा रही है। इस संदर्भ में शारदा—ग्रंथमाला के अन्तर्गत 'शारदा' नाम की पुस्तिका का प्रकाशन हो चुका है। एक और पुस्तिका 'हेरथ—अखज़ार' का प्रकाशन भी हुआ है। इस के अतिरिक्त केन्द्र के प्रकाशन प्रभाग द्वारा शारदा भूमि के महान सपूत, प्रतिभावान वैद्य, पण्डित समाज के उद्धारक श्रीमान श्रीभट्ट के विषय में पर्याप्त जानकारी प्रकाशित की गई है। साथ ही महाराजा ललितादित्य और महान दार्शनिक साहित्यकार क्षेमेन्द्र का प्रामाणिक जीवन चरित प्रकाशित होकर देश प्रेमियों तक पहुँचाया जा चुका है। इस दिशा में आगे भी कार्यरत रहेंगे, ऐसा हमारा संकल्प है। 2005 ई॰ में केन्द्र ने दो महत्व पूर्ण पुस्तकें प्रकाशित कीं। एक श्री प्रदीप कौल खोडबली द्वारा 'क्षेमेन्द्र' शीर्षक से अंग्रेज़ी भाषा में लिखी गई हैं; दूसरी पुस्तक डा॰ महाराज कृष्ण 'भरत' द्वारा हिन्दी भाषा में लिखी गई है। पुस्तक का शीर्षक है 'आद्यशक्ति का दिव्यस्थल — उमानगरी'। 2006 ई॰ में प्रोफसर भूषणलाल कौल द्वारा लिखित 'परमानन्द' पुस्तिका केन्द्र से प्रकाशित हुई और लोगों ने इस का विशेष स्वागत किया।

शारदा कम्प्यूटर संस्थान को 'इण्टरनेट' के साथ जोड दिया गया है। 'इण्टरनेट' पर केन्द्र का ई—मेल पता है — shardakendra31@rediffmail.com इसके साथ ही संजीवनी शारदा केन्द्र की अपनी स्वतन्त्र 'व्यब—साईट' का प्रवर्त्तन भी हो चुका है। 'व्यब—साईट' के लिये पता है — www.shardakashmir.org इस व्यबसाईट पर निम्नलिखित उपशीर्षकों के अन्तर्गत महत्वपूर्ण सामग्री

विशुद्धरूप में उपलब्ध होगी :—

कश्मीर से संबन्धित इतिहास, साहित्य, संस्कृति, वास्तुकला, चित्रकला, तीर्थस्थल, डाटा बैंक आदि।

संजीवनी शारदा केन्द्र एक पंजीकृत न्यास की देख—रेख में अपनी गतिविधियां चलाने में व्यस्त है। गतिविधियों को सुचारू ढंग से चलाने हेतु कई उप—समितियों का गठन किया गया है। यथा —

1. व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र उप—समिति।
2. समाज सुधार एवं संस्कार उप—समिति।
3. निर्माण एवं संस्थान कोषवृद्धि उप—समिति।
4. महोत्सव उप—समिति।
5. शोध एवं पुस्तकालय उप—समिति।

प्रत्येक उप—समिति अपने—अपने कार्यक्षेत्र में प्रयत्नशील है, और यथासम्भव सामाजिक विकास में अपना योगदान दे रही है।

2006 ई॰ में संजीवनी शारदा केन्द्र के सभागार में 30 बडे—बड़े फोटो चित्र लगाये गये हैं जो कश्मीर की महान विभूतियों की पुनीत स्मृति से जुड़े हैं। इन फोटो चित्रों को तैयार करने में केन्द्र के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर टी.एन.शाला का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है।

इसी प्रकार केन्द्र द्वारा पुस्तकालय की स्थापना भी एक महान उपलब्धि है। कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें केन्द्र के पुस्तकालय में आज उपलब्ध हैं और हर वर्ष इन पुस्तकों में वृद्धि हो रही है। केन्द्र के वार्षिक बजट में पुस्तकालय के हेतु पुस्तकें खरीदने का प्रावधान है।

गत वर्ष तीन योग्य बालिकाओं को 'मोहिनी ज्ञानार्जन छात्र—वृति' प्रदान की गई और समुचित वित्तीय सहायता दे कर उन्हें पढ़ने के हेतु पुस्तकें खरीदने की सुविधा प्रदान की गई। यह योजना आगे भी चलती रहे गी। इस के हेतु धनराशि किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रदान की जाती है।

संजीवनी शारदा केन्द्र विभिन्न विस्थापित कैम्पों में भी विशिष्ट कार्यक्रमों के आयोजन की योजना बना रहा है और आशा है कि निकट भविष्य में व्याख्यान—माला की शुरूआत की जायेगी।

मन्त्री
संजीवनी शारदा केन्द्र

स्वर्गीय पण्डित कृष्ण जू राज़दान
(1850-1926 ई॰)
(साधनारत भक्त एवं कवि)

कश्मीर में लीला और भक्ति काव्य के क्षेत्र में परमानन्द (1791- 1879 ई॰) के पश्चात् पण्डित कृष्ण जू राज़दान (1850-1926 ई॰) का योगदान अभूतपूर्व रहा है। उन्नीसवीं शताब्दी के आठवें दशक से लेकर बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक तक पण्डित जी कश्मीरी जन–मानस को अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा से निरंतर प्रभावित और प्रेरित करते रहे। पण्डित कृष्ण जू राज़दान अनन्तनाग (कश्मीर) के निकट वनपोह गाँव (तहसील कुलगाम) में एक सम्पन्न पण्डित परिवार में सन 1850 ई॰ में उत्पन्न हुए थे। उन की निश्चित जन्मतिथि के विषय में कुछ मतभेद अवश्य थे जिसे 'कुलयात कृष्ण राज़दान' के सम्पादक श्री सोमनाथ वीर ने दूर करने का प्रयास किया है। बिजबिहारा (विजयेश्वर) कश्मीर के प्रसिद्ध ज्योतिषी पंडित मधुसूदन शास्त्री की गणित–गणना की सहायता से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि कृष्ण राज़दान का जन्म 19 अगस्त 1850 ई॰ के दिन तथा देहान्त 13 दिसम्बर 1926 ई॰ को हुआ। श्री सोमनाथ वीर ने पर्याप्त परिश्रम करके कृष्ण राज़दान की अधिकाशं रचनाओं को एकत्र करके सन् 1984 ई॰ में 'कुलयात कृष्ण राज़दान' शीर्षक से एक रचना को अपनी सम्पादकीय टिप्पणियों के साथ तैयार किया और इसी वर्ष (सन् 1984 ई॰) जम्मू एण्ड कश्मीर एकेडमी आफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़, श्रीनगर द्वारा यह पुस्तक नस्तालीक़ लिपि में प्रकाशित हुई। एकेडमी द्वारा पाठ शुद्धि के साथ इसका दूसरा संस्करण सन् 2003 ई॰ में प्रकाशित हुआ।

विस्थापन के बाद पण्डित कृष्ण जू राज़दान के परिवार जनों ने उनकी समस्त रचनाओं को एकत्र करके देवनागरी लिपि में प्रकाशित करने की व्यवस्था की। श्री श्यामलाल राज़दान के सम्पादकत्व में कृष्ण जू की रचनाएँ निम्नलिखित तीन शीर्षकों के अतंर्गत देवनागरी लिपि में प्रकाशित हुई:

1. कृष्णु दर्शुन प्रकाशन वर्ष 1996 ई॰ (244 पृष्ठ)

   (कृष्ण जू राज़दान के विशिष्ट भजनों और लीलाओं का संग्रह)

2. 'शिव लगुन' प्रकाशन वर्ष 1998 ई० (267 पृष्ठ)
कृष्ण वॉणी' प्रकाशन वर्ष 2000 ई० (324 पृष्ठ)

पण्डित कृष्ण जू राज़दान वंश वृक्ष

श्री गणेश जू रैणा (राज़दान)
गाँव — 'वनपुह'
जम्मू कश्मीर राजमार्ग पर स्थित
तहसील —कुलगाम, कश्मीर।
पुत्र
कृष्ण जू राज़दान (1850-1926 ई०)
पत्नी — अरणिमाल
दो पुत्र रत्न
1. पण्डित आनन्दराम राज़दान (अविवाहित)
2. पण्डित शंकर नाथ राज़दान
पत्नी — वनुमाल

पण्डित शंकर नाथ राज़दान का गृहस्थ परिवार (संतान)

1. जिया लाल रैणा — 2. सर्वानन्द रैणा
3. महान्द जू रैणा — 4. पुत्री चान्दा
5. शम्भू नाथ रैणा — 6. श्याम लाल रैणा
7. पुत्री शुभमाली — 8. मोती लाल रैणा

1. जिया लाल राज़दान
पत्नी — गोनुवती
दुलारी — दीनानाथ — कीमता

2. सर्वानन्द राज़दान
पत्नी — शूभावती (शोभावती)
प्रभा — प्रेमनाथ — क्षमा — गिरिजा

3. महानन्द जू राज़दान
पत्नी — लीलावती
चूनी — श्यामा — दुर्गानाथ प्यारेलाल

4. पुत्री चान्दा
पति — पण्डित काशी नाथ धर
कृष्णा — बदरीनाथ धर

5. शम्भू नाथ राज़दान

पत्नी — रूपावती

विजया शकुन्तला बसन्ती सरोज

6. श्याम लाल राज़दान

पत्नी — श्यामरानी

सुन्दरीलाल भूषणलाल रत्नी चमनलाल

शादीलाल ललिता आशा

7. शुभमाली

पति — पण्डित काशी नाथ राज़दान

फूला ननसी शिबनलाल हीरालाल मुनी मुरारि

8. मोती लाल राज़दान

पत्नी — लक्ष्मीश्वरी

अशोक जी किरण जी सुषमा

राज़दान साहब के परिजनों ने देवनागरी लिपि में प्रकाशित तीनों पुस्तकों में महान भक्त कवि का संक्षिप्त किन्तु **अपूर्ण** जीवन परिचय भी दिया है जिस में पण्डित कृष्ण जू राज़दान का जन्म 12 भाद्रपद 1907 विक्रमी तदनुसार 19 अगस्त 1850 ई॰ तथा स्वर्गवास 27 मार्गशीर्ष 1983 बिक्रमी तदनुसार 13 दिसम्बर 1926 ई॰ माना गया है और ये तिथियाँ श्री सोमनाथ वीर द्वारा दी गयी तिथियों से मेल खाती हैं। (1) पण्डित कृष्ण राज़दान के पिता श्री गणेश जू राज़दान इलाके के एक प्रतिष्ठित ज़मीदार थे और तत्कालीन महाराजा के कृपापात्र। उन्होंने अपने पुत्र के लिये शिक्षा प्रदान करने के हेतु अनुभवी शिक्षकों की व्यवस्था की और बालक एक साथ संस्कृत और फारसी का अध्ययन करने लगा। धार्मिक शिक्षा और ज्योतिष विद्या का ज्ञान—बोध कराने के हेतु अलग से ज्योतिष—पण्डित को नियुक्त किया गया और कुछ ही वर्षों के अनन्तर बालक अपनी कुशाग्र बुद्धि एवं वचनचातुर्य से सब को प्रभावित करने लगे। (2)

कृष्ण जू का विवाह व्योस गाँव में एक ज़मींदार परिवार में हुआ था। पत्नी का नाम अरणिमाल था। अरणिमाल ने अपने वैवाहिक जीवन में दो पुत्र रत्नों को जन्म दिया आनन्दराम रैणा और शंकर नाथ रैणा (राज़दान)। यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस महान सन्त कवि ने वैवाहिक जीवन के समस्त उत्तरदयित्व को आजीवन निबाहया और गृहस्थ आश्रम में ही उस अखण्ड चेतन सत्ता को पहचानने और उसके लीलामय जगत के सौन्दर्य कणों को

बटोराने का प्रयास किया है।

एक साथ संस्कृत और फारसी का गहन अध्ययन करने के कारण पण्डित जी दो विशिष्ट संस्कृतियों के गरिमामय इतिहास से भी परिचित हुए। कश्मीर के शैव दर्शन का गहरा प्रभाव उनके व्यक्तित्व एवं चिन्तन पर पड़ा। यहाँ इस बात को स्पष्ट कर देना उचित होगा कि मूलतः वे शिव भक्त थे शिव और शक्ति के अनन्य उपासक। (3) यह सत्य है कि साधना के पथ पर वे सगुण भक्ति के प्रति भी आकर्षित हो उठे और धीरे–धीरे एक महान समन्वयकारी साधक के रूप में भक्तजनों के आकर्षण का केन्द्र बन गये लेकिन शिव साधना को उन्होंने अपनी भक्ति का मूल केन्द्र माना है। शिव के प्रति अपनी आस्था के अनुरूप श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए लिखते हैं :

'शिवुय छु क़ेशव केशव छु शिवुय
थॅन्य ऑस अद् प्योस ग्यवुय नाव।'(4)

शिव ही हैं केशव और केशव शिव हैं
पहले माखनथा फिर नाम पडा है घृत ।

कृष्ण के सगुण रूप पर भी वे मोहित हैं अतः अपनी सुधबुध खोकर कृष्ण लीलाओं में जीवन की सार्थकता को ढूँढने का निरन्तर प्रयास भी उन्हों ने किया हैं। समन्वयवादी दृष्टि से प्रेरित वे कभी शिव की उपासना करते हैं और कभी विष्णु स्वरूप श्री राम और श्री कृष्ण की लीलओं का गुणगान। (5) भक्ति और लीला काव्य के क्षेत्र में यह मणि कांचन का योग अपने आप में अद्भुत था। इसी प्रकार का समन्वयात्मक दृष्टिकोण कश्मीर के सूफी कवियों में भी देखने को मिलता है। जहाँ इस्लामी तसव्वुफ में भारतीय वेदान्त एवं शैवदर्शन के तत्त्व घुल मिला गयें हैं। वस्तुतः यह स्थिति एक ऐतिहासिक तथ्य की ओर भी संकेत करती है। शताब्दियों से कश्मीर शैवमत एवं शैवदर्शन का प्रमुख केन्द्र रहा है। उसकी जडें उस समय भी काफ़ी मज़बूत और गहरी थी, जब इस्लाम कश्मीर पहुँचा अथवा जब सगुण भक्ति के प्रति लोग आकर्षित होने लगे। वैष्णव सम्प्रदाय की कमज़ोर लहर का कोई क्रान्तिकारी प्रभाव यहाँ के जनमानस पर नहीं पडा है। हाँ, इतना अवश्य हुआ कि कुछ प्रतिभा सम्पन्न भक्तजन इस आन्दोलन के प्रति आकर्षित हुए लेकिन उन में स्पष्ट रूप से निर्गुण की अवहेलना करने का साहस नहीं था, फलतः एक ही परमतत्त्व की विद्यमानता सर्वत्र स्वीकार करते हुए निर्गुण और सगुण

की स्तुति वन्दना एक साथ होने लगी। युग की विवशताओं ने ही इस समन्वयात्मक दृष्टिकोण को पनपने का सुअवसर प्रदान किया। पण्डित कृष्ण जू राज़दान कश्मीर के इन्हीं समन्वयवादी भक्त कवियों में से एक हैं।

कृष्ण जू का रचना संसार

कृष्ण जू राज़दान की रचनाओं का विभाजन मुख्यतः दो प्रकार से किया जा सकता है :

वर्णनात्मक कथा काव्य

स्फुट भक्ति—परक लीला काव्य

वर्णनात्मक कथा काव्य के क्षेत्र में उन की उल्लेखनीय रचना है — 'शिव—परिणय'। यह रचना रायल ऐशियाटिक सोसाइटी (बंगाल) ने सन् 1913 से सन् 1924 तक धारावाहिक रूप से छः किस्तों में देवनागरी लिपि में प्रकाशित की। सन् 1924 ई॰ में ही इसका प्रकाशन पुस्तकाकार में हुआ। यह पुस्तक जम्मू कश्मीर रिसर्च लाइब्रेरी (कश्मीर विश्वद्यालय) में उपलब्ध है। इस के 614 पृष्ठ हैं। बायीं ओर कृष्ण जू राज़दान द्वारा लिखित शिव—परिणय कथा देवनागरी लिपि में लिखी गई है और दाहिनी ओर उस काव्यांश का संस्कृतानुवाद देवनागरी लिपि में ही दिया गया है। पुस्तक के मुख—पृष्ठ का प्रारूप इस प्रकार दिया गया है—

'शिव परिणय'

Siva - Parinayah

(A Poem in Kashmiri Language)

KRSNA RAJANAKA (RAZDAN), With a CHAYA OR GLOSS IN SANSKRIT, By : Mahamohopadhyaya Mukundarama Sastri, Edited by Sir George A. Grierson, Printed at the Baptist Mission Press, Published by the Asiatic Society of, Bengal, Calcutta 1924. [Accession Number of the Book in Research Library at Srinagar, (University Campus)], 3998 891.49611, 4434 R 21 S, Total Pages 614

इस वर्णनात्मक कथा काव्य का केन्द्र बिन्दु है — शिव और शक्ति का विवाह और अभिव्यक्ति की मुख्य शैली है — लीला। इस सम्पादित ग्रन्थ की एक अन्य विशेषता यह है कि उस समय कश्मीर

के महान संस्कृतविद् स्वर्गीय पण्डित मुकुन्दराम शास्त्री ने इन लीलाओं का भाषानुवाद संस्कृत में किया जो मूलपाठ के साथ प्रकाशित हुआ है। मूल कथा तत्त्व से अलग हट कर अनेक लीलाएँ सगुण भक्ति से प्रेरित होकर लिखी गई हैं जहाँ मूल आकर्षण तत्त्व शिव नहीं हैं अपितु बाल सखा कृष्ण हैं।

लगभग इसी समय फारसी लिपि में पण्डित कृष्ण राज़दान की रचनाओं का एक संकलन 'हरिहरकल्याण' शीर्षक से श्री अली मुहम्मद पुस्तक विक्रेत (हब्बाकदल, श्रीनगर कश्मीर) के द्वारा श्रीनगर से दो भागों में प्रकाशित हुआ जिस में शिव—शक्ति के विवाह की वर्णनात्मक कथा के अतिरिक्त स्वतंत्र रूप से कई लीलायें और भजन भी संगृहीत हैं। इस के सम्पादक हैं — श्री हरिहर कौल (स्वामी हरिहर). इसी रचना का दूसरा नाम है — 'शिव लग्न'।

सन् 1984 ई॰ में जम्मू कश्मीर कल्चरल एकेडमी की ओर से पण्डित कृष्ण राज़दान की समस्त रचनाओं का एक संकलन प्रकाशित हुआ जिस के सम्पादक श्री सोमनाथ वीर हैं। पण्डित जी ने कई लीलाएँ एवं भजन हिन्दी बोली में तथा कुछ ग़ज़ल शुद्ध फारसी भाषा में लिखे हैं। कश्मीरी भाषा में लिखी हुई इन की लीलाओं और भक्ति परक रचनाओं की संख्या 400 से भी अधिक है। आज भी पण्डित जी के परिवार जनों के पास, जो अब विस्थापन के पश्चात जम्मू और दिल्ली में रह रहें हैं, पण्डित जी के कई क़लमी नुसखे मौजूद हैं जिन्हें वे पैतृक सम्पत्ति समझ कर अपने ही पास सुरक्षित रखना चाहते हैं। सन् 1996, 1998 और 2000 ई॰ में क्रमशः उन के परिवारजनों ने पण्डित कृष्ण जू राज़दान द्वारा लिखित काव्यरचनाओं के तीन संकलन देवनागरी लिपि में प्रकाशित किये।

विस्थापन के बाद पण्डित जी को जनमानस के साथ जोड़ने का यह प्रयास स्तुत्य है। आवश्यकता इस बात की है कि नस्तालीक लिपि के साथ—साथ कश्मीरी भाषा का अधिकतम साहित्य देवनागरी लिपि में भी प्रकाशित हो ताकि सम्पूर्ण देश में कार्यरत युवा कश्मीरी जनमानस अपने सांस्कृतिक विरसे के साथ जुड़ा रहे। राज़दान परिवार ने इसी उद्देश्य से कृष्ण जू राज़दान की रचनाओं को देवनागरी लिपि में प्रकाशित कराने की व्यवस्था की। यह समय की सब से बड़ी आवश्यकता है और समय के साथ क़दम बढ़ा कर चलना ही जागरूक मानस की पहचान है।

शिव परिणय

पण्डित कृष्ण जू राज़दान के सम्पूर्ण भक्ति—काव्य की एक विशेषता यह है कि उन्होंने दर्शन और चिन्तन के घुमावदार और उलझनमयी स्थितियों से दूर रहकर विशुद्ध भक्ति भाव से अपने इष्ट के प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित किये हैं। (6) लेकिन इस का अभिप्राय कदापि यह नहीं लिया जाना चाहिए कि कृष्ण राज़दान के भक्ति काव्य में विचारों की गहराई नहीं है। उनका सब से बड़ा आकर्षण वस्तुतः उनकी सचाई और सादगी में निहित है। वे एक जन्मजात कवि थे। उन की रचनाओं का गहन अध्ययन करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि पण्डित कृष्ण राज़दान का कवि व्यक्तित्व उन के साधानारत साधक के व्यक्ति से कहीं अधिक सशक्त एवं आकर्षक है। स्वर्गीय मोतीलाल साक़ी के विचारानुसार वे पहले कवि हैं फिर भक्त। उन में सृजन की असाधारण क्षमता है। (7)

शिव—शक्ति की प्रणय—कथा ने पण्डित जी को विशेष रूप से मोह लिया था। विभिन्न उपशीर्षकों के अतंर्गत उन्होंने इस सूक्ष्म कथा—सूत्र को मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयास किया है। यहाँ अनेक पौराणिक सन्दर्भ, मिथकीय पात्र, जनश्रुति एवं लोक—विश्वास पर आधारित घटनाएँ, परम्परागत मान्यताएँ एवं विश्वास भक्त कवि को सर्जन के लिए प्रेरित करते हैं।

सृष्टि रहस्य, दक्ष पुत्री सती का मेहश्वर के साथ विवाह एवं कैलास गमन, दक्ष क्रोध, यज्ञायोजन, सती द्वारा अग्नि समर्पण, वीर—भद्र द्वारा दक्ष के यज्ञ को तहसनहस करना, ब्रह्मा, विष्णु, यमराज, इन्द्र, वरुण, चित्रगुप्त, गन्धर्व, सूर्य, चन्द्रमा, लक्ष्मी, सरस्वती, बृहस्पति, नारद तथा अन्य अलौकिक शक्तियों द्वारा शिव जी के क्रोध को शान्त करने के हेतु अस्तुति, लज्जित अवस्था में दक्षप्रजापति द्वारा शिव ज़ी को संतुष्ट करने के हेतु विनीत शब्दों में वन्दना, हिमालय की कथा और पार्वती का जन्म, सती के द्वारा शिव की तलाश, कठोर तप, शंकर का रूप बदल कर उपस्थित होना और गौरी के प्रेम की परीक्षा लेना, जोगी और पार्वती के बीच बहस, शिव पार्वती के विवाह का निर्णय, बारातागमन, दूल्हा का विरक्त जोगी रूप, मीनावती का विलाप और शिवस्तुति, शिव जी का प्रसन्न होकर तथा आनन्दमय वैभवशाली रूप धारण कर पार्वती को वरण करना, कश्मीरी पण्डितों के रीति—रिवाजानुसार विवाह, द्वारपूजा, आदर—सत्कार, लग्न और पुष्पपूजा, विदाई से पूर्व स्वर्ण हिमपात,

हिमालय और मीनावती का हर्षोल्लास, विवाह गीत 'वनवुन' का हर्षनाद, वर—वधू विदाई, शिव नाम की महिमा, तीन वरदान पाने के हेतु भक्त की प्रार्थना, आत्मज्ञान प्राप्ति हेतु शिव अस्तुति, शरणागत अस्तुति, शिव—पार्वती की रुख़सती (बिदाई) के बाद हिमालय के निकट सम्बन्धियों का सामूहिक गान एवं हर्षनाद आदि प्रमुख कथा प्रसंगों एवं घटनाओं के आधार पर 'शिव परिणय' की सृष्टि कवि ने अपनी मौलिक प्रतिभा एवं सर्जनात्मक क्षमताओं के आधार पर की है। शैवमतानुसार कश्मीरी पण्डितों के लोक—विश्वासों की अत्यतं मनमोहक अभिव्यक्ति इस वर्णनात्मक कथा—काव्य के माध्यम से हुई है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण बात यह है कि 'शिवपरिणय' में स्थानीय रंग निखर कर सामने आया है। यहाँ तक कि शिवरात्रि महात्म्य भी कवि के आकर्षण का केन्द्र बनकर उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा को महिमामंडित कर देता है। कवि ने कश्मीरी पण्डित घरों में सम्पन्न होने वाले विवाहोत्सव के समस्त सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों का विशेष ध्यान रखा है। बारात का उचित स्वागत सत्कार, लग्न से पूर्व द्वारपूजा, लग्न पर कन्यादान, पुष्पपूजा, अग्नि के फेरे, विभिन्न देवी देवताओं को साक्षी मान कर वर द्वारा वधू को वरण करने की प्रतिज्ञा, अग्निहोत्र (8) दूल्हा को 'मननमाल' (9) बान्धना, विदाई की तैयारी और इन समस्त धार्मिक— सामाजिक अनुष्ठानों पर स्त्रियों द्वारा लगातार 'वनवुन' (10) गीत गाना इस कथा काव्य को न केवल महिमा मंडित कर देता है अपितु शिव शक्ति की प्रणयकथा को पारिवारिक सन्दर्भों के साथा जोड़ देता है।

'शिव—परिणय' वर्णनात्मक कथा काव्य का आरम्भ मंगलाचरण से होता हैं गणाधिपति महागणेश की स्तुति के बाद कवि सद्गुरु के सम्मुख नत—मस्तक होकर विनीत भाव से प्रार्थना करता है कि :

—'ओन छुस ज़ॉन्य हुंज़ वथ वुछनावतम
सतगोरु हावतम गटि मंज़ गाश।
वोलनस सम्सारुचि मायाये
मोकलय चानि व्वपाये सुत्य
दयायि हुंज़ई नज़रा त्रावतम
सतगोर हावतम गटि मंज़ गाश
मूलु तलु ओसुस न्यर्मल पोनी
व्यवहारु प्रकृच़ कोरनम यख

न्यर्णय गरमी सुत्य व्यगलावंतम
सतगोरु हावतम गटि मंज़ गाश।'(11)

हिंदी पद्यानुवाद

—'दृष्टिहीन हूँ, ज्ञान ज्योति से मार्ग प्रशस्त हो मेरा
सदगुरु! अन्धकार में जोत जला दे।
उलझ गया हूँ जग—माया में
उपाय सुझा दे मुक्ति का,
वर दे अपनी दया दृष्टि का
सदगुरु! अन्धकार में जोत जलादे।
वास्तव में था मैं निर्मल जल
व्यवहार से प्रकृति हो गयी यख़
निर्णय ताप से उसे गला दे
सद्गुरु! अन्धकार में जोत जला दे।'

कश्मीर में शैव—दर्शन 'त्रिकदर्शन' या 'त्रिकशासन' नाम से भी पर्याप्त चर्चित रहा है। यह प्रधानत: तीन तत्त्वों पर आधारित है — शिव तत्त्व, शक्ति तत्त्व तथा नर—तत्त्व। तीनों तत्त्व परस्पर एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं अपितु एक ही शिव तीनों में विद्यमान हैं। इसलिए शैवदर्शन अद्वैतवादी चिन्तन के पर्याप्त समीप माना जाता है। डॉ. बी.डी. शास्त्री के विचारानुसार — 'एक ही शिव अपनी स्वातन्त्र्य शक्ति से तीनो रूपों में प्रकट होता हैं। इसीलिये इस शैव—दर्शन को अद्वैतवादी कहा गया है। शिव अपनी शक्ति से संसार की रचना करते हुए भी अपनी पूर्णता नहीं खो देते। यह ब्रह्माण्ड उसी पूर्ण शिव का पूर्ण आभास है। इसी लिये कश्मीर के शैव दर्शन—तत्त्ववेत्ताओं ने सारे संसार को शिवमय (सर्व शिवमय जगत्) माना है।'(12)

शैवानुयायियों का यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विश्वास है कि 'शिव अपनी शक्ति से संसार की रचना करते हुए भी अपनी पूर्णता नहीं खो देते।' उमा के विवाह पर दक्ष प्रजापति अपने हर्षोल्लास को व्यक्त करते हुए तथा शिव महिमा का बखान कर सम्पूर्ण सृष्टि के शिवमय होने का आभास इस प्रकार देते हैं :

—'नय छुस गोड तय नय छुस अन्द
शिवन थ साँपनुम बान्दव तु बन्द
ज़गतुक ईशर सुई ज़ानुन
सुई परमात्मा सुई स्वच्छन्द
शिवनाथ साँपनुम बान्दव तु बन्द।

सुई छु शास्त्र तु वेद सागर
सुई छु आसुवुन विद्याधर
सुई छु सार ओमकारुक ब्यन्द
शिवनाथ सॉपनुम बान्दव तु बन्द।' (13)

हिंदी अनुवाद

—'नहीं है आदि और न अन्त
शिव नाथ हुए अपने बान्धव
वही जगत के हैं ईश्वर
वही परमात्मा और वही स्वच्छन्द
शिवनाथ हुए अपने बान्धव
वही शास्त्र है वेद सागर
वहीं अपस्थित है विद्याधर
वही सार—बिन्दु ओमकार के
शिवनाथ हुए अपने बान्धव।'

शिव-शक्ति सम्बन्ध

शिव और शक्ति के पारस्परिक सम्बन्ध की ओर संकेत करते हुए कवि लिखते हैं कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। वस्तुत: शक्ति के बिना शिव शव हैं। यदि शिव ज्ञान रूप हैं तो शक्ति क्रियारूप है। शिव अपनी इच्छा को शक्ति के द्वारा ही सफल कर देते हैं। (14) कवि के कथनानुसार रात और दिन, पृथ्वी और आकाश, अनार के दाने और अनार, अमृत कुंड और अमृत, लक्ष्मी और नारायण तथा सावित्री और ब्रह्मा का जो सम्बन्ध परस्पर है वही पार्वती और शिव अर्थात् शक्ति और सदाशिव का परस्पर एक दूसरे के साथ है:

—'चु छुक दोह तु ब्व छस रात चु आकाश तु ब्व बुतरात
चु छुक दॉन बव छस दानु ब्व छस पानु दयालु
चु छुक ड्यकु प्यठुक टिकु ब्व छस बुथि प्यठुक तीज़
ड्यकस टिकु छु शूबानु ब्व छस पानु दयालु।' (15)

हिन्दी अनुवाद

—'तुम दिन हो और मैं रात, आकाश हो तुम मैं धरती
तुम अनार हो और मैं दाना अनार का, दयालु! शरण मैं आई तेरे।
तुम मुख—मंडल की शोभा हो और मैं मुख का तेज
टीका श्रृंगार है माथे का, दयालु! शरण मैं आई तेरे।'

सती द्वारा अग्नि समधि के पश्चात् हिमालय के घर (16) पार्वती का जन्म 'शिव परिणय' के कथानक का अग्रिम सोपान है। हिमालय के घर में बडे लाड़ प्यार के साथ लालन—पालन होता है। पूर्व जन्म की प्रत्येक घटना उस के मानस—पटल पर अंकित है। कठोर तप का व्रत लेते हुए वह अपने होनेवाले भर्ता की तलाश में वन—वन भटकती है। हर गोशे और चमन में उसे शिव की तलाश है। उसे लगता है कि प्रकृति का कण—कण शिवमय है। शिव का अद्भुत सौन्दर्य ही सर्वत्र व्याप्त है पर साकार रूप में उसे वरण करने की उत्कट इच्छा से प्रेरित पार्वती शिव का गुण—गान करती हुई वस्तुतः प्राणप्रिय में लय होने के हेतु व्याकुल दिखाई देती है। प्रिय की मधुर—स्मृति उसे वन—वन भटकने के लिए विवश कर देती है। उसे विश्वास है कि शिव ही इस सृष्टि का मूल कारण हे और प्रकृति के कण—कण में उसी का रूप लावण्य प्रतिबिम्बित है :

—'चुय छुक ज़पु यग्युक ज़प चुय छुक तपु वनुक तप
चुय छुक सादन हुंदुई साद क्यथो याद मे प्योहम
चुय छुक यूग्यन हुंदुय यूग चुय छुक प्राणयन हुदुंई प्राण
चुय छुक सतकुई संवाद क्यथो याद मे प्योहम
चुय छुक डखु चुयि छुक नखु चुय छुख दूर चुयि नज़दीक
चुय छुक सारनुई हुंद आदि क्यथो याद मे प्योहम
चुय छुख दोख चुयि छुक सोख चुय छुक परमानन्द मोख
चुय छुक कम चुयि छुक ज़्यादु क्यथो याद मे प्योहम। (17)

हिंदी अनुवाद

'तुम ही हो जप—यज्ञ का जप और तपोवन का तप
तुम ही हो योगेश्वर महान सुध आई तेरी कैसे!
तुम ही हो योगियों का योग और हो प्राणियों के प्राण
तुम ही हो सत् का संवाद सुध आई तेरी कैसे!
तुम ही हो सहाय, संग तुम्ही हो, पास हो तुम और दूर
तुम ही सब जन के हो आदि सुध आई तेरी कैसे!
तुम ही हो दुःख और सुख तुम ही हो और हो परमानन्द मुख
तुम ही कम हो और हो ज़्यादा सुध आई तेरी कैसे!'

विवाह कथा

बहुत तलाशने के बाद तथा प्रेम की कठिन परीक्षा लेने के बाद

आशुतोष गौरी पर प्रसन्न होते हैं और उसके साथ विवाह सूत्र में बन्ध जाने का वचन देकर वापस कैलास पर्वत पर लौट आते हैं और सप्तऋषियों के साथ अरुंधती तथा नारद मुनीश्वर को हीमाल के घर गौरी का हाथ मांगने के लिए भेज देते हैं। मीनावती और हीमाल सहर्ष रिश्ते को स्वीकार करते हैं और तत्पश्चात् निश्चित तिथि पर विवाह हेतु शिव जी विकराल और विचित्र मुद्रा में सर्पमाला धारण किये, वृषभ पर सवार, भस्मस्नात, गजचर्म ओढ़े मस्तानी चाल में, गणों के संग हीमाल के घर बारात के साथ पहुँचते हैं। देखेते ही मीनावती नारद मुनीश्वर के सम्मुख रोते रोते विलाप करती है। वह शिव ज़ी की इस लीला को समझ नहीं पाती। क्रुद्ध होकर वह अपने आप को कोसती है और बेटी के निर्णय पर क्षोभ व्यक्त करती है। जोगी बाबा को बेटी के दूल्हा के रूप में देखकर वह तड़प उठती है और भीतर की वेदना को अश्रुओं से भिगो कर नारद मुनीश्वर के सम्मुख इस प्रकार व्यक्त करती है :

—'दप्योनस ब्ययि नारद जी यि क्या गोम
गासोन्या ह्यूह यि क्युथ महाराज़ु यिथ प्योम
यि कॅम्य योछ़नम युथुई महाराज़ु यीनय
गोसोन्या ह्यूह राज़ु कुमारे चे नीनय
दिचन अदु बाख लॅजिस वोन्य लूकु पामन
मलुनि लॅज खाक वॉलिन चाक जामन
दमन मंज़ वुछ बनान क्या व्यवुहारस
सॅपुन मातम सराया राज़ुदारस।'(18)

हिन्दी अनुवाद

'कहा मीना ने नारद से 'फूटे भाग मेरे'
यह भस्माधारी सन्यासी कैसे दूल्हा बन आया?
किस ने कांछा मेरी बेटी के हेतु ऐसा दूल्हा?
किस ने चाहा राज कुमारी को वर ले जोगी?
चीख़ उठी वह व्याकुल होकर लोक लाज के भय से
खाक मल ली तन पर अपने फाड़ लिये सब वस्त्र
देखो, क्षण मात्र में क्या से क्या हो जाता
राजमहल में देखते देखते मातम छाया।'

पर्याप्त अनुनय विनय के पश्चात् शिव जी प्रसन्न होकर अद्भुत सौन्दर्युक्त और तेजवान दूल्हा का रूप धारण कर लेते हैं और तत्पश्चात् गौरी का विवाह सम्पन्न हो जाता है। विवाह के अवसर पर

वे समस्त धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक रीति–रस्म पूरे किये जाते हैं जो कश्मीरी पण्डित परिवारों में ऐसे शुभावसरों पर सम्पन्न होते हैं। लगन–मंडप पर पुष्प–पूजा का कवि ने विशेष रूप से वर्णन किया है। नाना रंगी पुष्प अर्पित करते हुए दूल्हा–दुलहिन की बड़ी श्रद्धा के साथ पूजा की जाती है और परिवार के सभी निकटस्थ सम्बन्धी तथा देवी–देवता गण इस पूजा में सम्मिलित होकर भविष्य की मंगल कामना करते हुए नव–दम्पति के लिये सुखद पारिवारिक जीवन जीने की कामना करते हैं। मंत्रोच्चारण के साथ लग्न का यह विशिष्ट अनुष्ठान सम्पन्न होता है। शिव और शक्ति की वर–वधू के रूप में पुष्पपूजा हो रही है। यह दृश्य स्वर्गिक है और कवि इस का एक फोटोचित्र शब्दों के माध्यम से अत्यन्त कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करते हैं :

—'अनिख वॅन्य दिथ चोपॉरी पोश सॉरी
करनि लॅग पोशि पूज़ा चॉर चॉरी
कॅरिथ प्रथ रंगु रंगै पोशनुय ढेर
कोरुख शिव–शक्ति रूपस अॅन्दु अॅन्द गेर
परान ओस वीद मंगल श्रुकि ब्रह्मा
उमा छय सुत्य सुत्यी कर चु क्षमा
तिमन बासयोव न्यबरु अन्दर शिवुय शिव
चलिख नीरिथ, शिव सॅन्द लोलु आलव।'(19)

हिन्दी अनुवाद

'ढूँढ ढूँढ कर चारों ओर से लाये फूल
फूल चुनचुन कर पुष्प पूजा में लीन हुए
नान रंगी फूलों के अम्बार लगे
मंडलाकार में घेर लिया शिव शक्ति को
वेद मंत्रों का पाठ कर रहे थे ब्रह्मा जी
उमा संग है शिवजी के, दया करो हम पर
अन्तर बाहर शिव ही शिव है, यह महसूस हुआ उनको
प्रेमावेग में लेने लगे केवल शिव का नाम।'

स्त्रियों की ओर से यह शिकायत करने पर कि पिया के घर से गौरी के गहने नहीं आये हैं शंकर की इच्छा से स्वर्ण हिमपात शुरु हो जाता है। लोग आश्चर्यचकित हो उठे और सारा वातावरण शिव के जय जयकार से गूँज उठता है।

—'सवनु शीनु बुतराथ बरनय आये जय जय भगवत मायाये

सारिनुय गहनुक तमना दराये शेंकरन कॉच़ा लाँकरन त्रॉव
डाय गज़ स्वनुक खॅतय भूमिकाये, जय जय भगवतमायाये
शरनुय आय चे़ बेपरवाये बडि दयि यितु असि दयायि प्यठ
दरिनय जल़ प्यन लरि तय जाये, जय जय भगवतमायाये।'(20)

हिन्दी अनुवाद

—'स्वर्ण हिमसे हुई आच्छदित धरती
जयजयकार है भगवद् माया
गहनों की इच्छा पूर्ण हुई सबकी
शंकर ने बरसाये कितने आभूषण
भूमि पर स्वर्ण अम्बार चढ़ा ढाई गज़
जय जय कार है भगवद् माया
निश्चिन्त शरण आये हैं तेरे
ईश दया करो हम पर
नहीं रुके गा (हिमपात) घर द्वार ढह जायेंगे
जय जयकार है भगवद् माया।'

इस के पश्चात् शिवरत्रि के महात्मय पर प्रकाश डाला गया है। कवि मधुर कंठ से शिव—पार्वती मिलन के महिमा गान में लीन हो जाते हैं। इधर प्रसन्न चित हिमालय नारायण एवं विष्णु का गुण—गान करते हुए श्री कृष्ण अस्तुति गान भी करते हैं। शिव रात्रि के दार्शिनक पहलू पर विचार करते हुए कवि शिवरात्रि तथा शाक्तमत के आधारभूत तत्त्वों पर प्रकाश डालते हैं। अब शिव जी पार्वती के साथ कैलास पर्वत की ओर प्रस्थान करने के हेतु तैयारी कर रहे हैं और विदाई के समय मीनावती के साथ साथ अन्य उपस्थित सगे सम्बन्धी पुनः शिव वन्दना करते हुए गद्गद हो उठते हैं। इसी प्रकार शिव जी के रुख़स्त होने पर हीमाल के समस्त शुभ—चिन्तक एकत्र होकर मुदित मन से शिवनाथ की स्तुति—वंदना करते हैं और इस शुभ—विवाह अनुष्ठान के सम्पन्न होने पर एक दूसरे को बधाई देते हैं। कवि तत्पश्चात् 'ओ३म्' शब्द की दार्शनिक व्याख्या शिव—लीलाओं के द्वारा करते हैं और संसार के मिथ्या/नश्वर/असार होने का एहसास उसे संसार व्यवहार में मग्न लोभी जनों को सावधान करने के लिए प्रेरित करता है :

—'सम्सारस मंज़ रोज़ न्यरमल
वुछ तु ख्यल वॅथरस लारि मा ज़ल
पॉनिस मंज़ ऑसिथ तराव त्राव

डॅल मॅ होशु च़्यतकी पम्पोश छाव।
न्यष्कल रूपकुय पॅलावा ख्य
न्यरमायायि हुंज़ चाया चे
मुह वति थकनुक रोज़ी नु ताव
डॅल मॅ होशु च़्यतकी पम्पोश छाव।
विवेकु वयसरु मंज़ कर श्राना
अद्वैतु पानि नाव मन तय प्राण
तुरया बागु यूगु न्यन्द्रा त्राव
डॅल मॅ होशु च़्यतकी पम्पोश छाव।
स्यज़रुकि स्वथि पख सतु सु सुत्य
अज़तॉन्य वतु गथ आयि गय कुत्य
त्यागु खोरन लाग वॉरागु खाव
डल मॅ होश च़्यतकी पम्पोश छाव।'(21)

हिन्दी अनुवाद

—'संसार में रहो निर्मल,
देखो पद्म का पत्ता रहता जल के ऊपर
पानी में रहकर भी त्याग तरावट
होश नहीं खोना,
बुद्धि—विवेक के पद्म—पुष्प का आनन्द भोग।
निष्कल रूप का खा ले पुलाव,
निर्—माया की पी ले चाय
मोह—पथ पर थकन रहेगी न शेष,
होश नहीं खोना,
बुद्धि—विवेक के पद्म—पुष्प का आनन्द भोग।
विवेक के वयसर (22) में कर ले स्नान,
मन प्राण से अद्वैत का कर ले पालन
तुरीय अपवन में योग निद्रा का सुख भोग,
होश नहीं खोना,
बुद्धि—विवेक के पद्म—पुष्प का आनन्द भोग।
सत् के संग सहजता के बान्ध पर चल,
आना जाना लगा रहा आज तक
(आये कितने और चले गये)
त्याग—चरणों में पहन ले वैराग्य पादुका,
होश नहीं खोना,
बुद्धि—विवेक के पद्म—पुष्प का आनन्द भोग।'

'शिव—परिणय' के अन्त में कवि ने गौरी के प्रति अस्तुति गान को उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया है। स्पष्ट है कि 'शिव—परिणय' में शिव—पार्वती के विवाह की कथा मुख्य रूप से वर्णित है और इस के लिये कवि ने कथा वाचक के समान वर्णनात्मक शैली को अपनाया है। लेकिन रचना का सम्पूर्ण सौन्दर्य केवल कथा—वर्णन में ही नहीं है अपितु कई अन्य तत्त्वों के समुचित संयोग से 'शिव परिणय' पौराणिक सन्दर्भों से जुड़ी, सर्जन की अद्‌भुत क्षमताओं से युक्त एक विशिष्ट रचना बन पड़ी है। विवाह—कथा के साथ—साथ इस रचना के कुछ अन्य विचरणीय प्रमुख आकर्षण इस प्रकार हैं:

शिव परिणय के प्रमुख आकर्षण बिन्दु

1. 'शिव परिणय' में वर्णनात्मक कथा—शैली और गीति—शैली का समुचित अंयोग हुआ है। कथा की मुख्य धारा में असंख्य शिव लीलाएँ भी प्रवाहित हैं। इतना ही नहीं, कृष्ण लीलाएँ और देवी—देवताओं के अस्तुति—गीत एवं भजन भी हमें इस में देखने को मिलते हैं। वही समन्वयात्मक दृष्टिकोण इस रचना में भी अपनाया गया है और विष्णु के अवतार रूप की वन्दना मुक्त कंठ से की गई हैं। कृष्ण राज़दान पूर्ण रूप से सगुण भक्त थे अथवा निर्गुण — यह कहना तनिक मुश्किल है, लेकिन इस में सन्देह नहीं कि वे शिव के अनन्य उपासक थे। समन्वयात्मक चिन्तन से प्रभावित होकर उन्होंने अन्य पारमार्थिक शक्तियों की अवहेलना नहीं की। समस्त धाराओं और उपधाराओं को समेटते हुए उन्होंने भक्ति स्रोतस्विनी के प्रवाह में वेगवाही गति प्रदान की। कश्मीरी भक्ति काव्य का यह समन्वयवादी दृष्टिकोण कई ऐतिहासिक कारणों, घटनाओं ओर दुर्घटनाओं के कारण विकसित हुआ है। शताब्दियों तक पराधीनता की विवशता झेलते हुए भक्त—जन— मानस हर प्रवाहित धारा से अपनी प्यास बुझाने लगा। कृष्ण जू राज़दान ने समय की आवश्यकता को पहचानते हुए परम्परा का पालन किया हैं यही कारण है कि भक्ति के किसी सम्प्रदाय अथवा वर्ग के साथ उन्हें जोड़ा नहीं जासकता।

आरम्भ में ही यह बात स्पष्ट कर दी गई है कि वे एक मंझे हुए कलाकार (कवि) थे। पहले कवि थे ओर फिर भक्त अत: प्रत्येक रचना में, चाहे वह शिव से सम्बन्धित है या श्रीराम अथवा श्रीकृष्ण से, एक सच्चे कवि का कवि—हृदय प्रतिबिम्बित दिखाई देता है। यहाँ शिव—स्मृति में कृष्ण लीला का माधुर्य घुल—मिल गया है।

कृष्ण भक्ति में अन्य देवी—देवता भी भागीदार बन गए हैं। यह तो अजब संगम है जो एक सच्चे भक्त को जहाँ आनन्द विभोर कर देता है वहाँ विवेकी जन को कई शंकाओं में भी डालदेता है। शंका व्यक्त करना साहित्यिक स्वास्थ्य के हेतु शुभ लक्षण है, अशुभ नहीं।

2. 'शिव परिणय' की सम्पूर्ण कथा लोक मानस से जुड़ी है। एक विशिष्ट परिवेश (environment) को ध्यान में रख कर राज़दान साहब शिव—पार्वती की विवाह—कथा सुनाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह शुभ विवाह कश्मीर में किसी प्रतिष्ठित पण्डित—परिवार के घर में हो रहा है। अतः विशिष्ट लोकजीवन और समाज से सम्बन्धित प्रत्येक रीति—रिवाज का पालन बड़े चाव के साथ हो रहा है। 'शिव—परिणय' में निस्सन्देह कश्मीरी पण्डितों का पारिवारिक जीवन समस्त विश्वासों, परम्पराओं, रीति—रिवाजों और मान्यताओं के साथ प्रतिबिम्बित हो उठा है। उत्सव कश्मीरी पण्डित परिवार से जुड़ा है और यह लोकरंग इसे जन मानस के साथ स्थायी रूप से जोड़ देता है।

3. शैव—दर्शन तथा अद्वैतवादी विचारधारा का प्रभाव सम्पूर्ण रचना में सामूहिक रूप से देखने को मिलता है। यहाँ शिव त्रिक—सिद्धान्त के आधार पर तीनों रूपों में (शिव रूप, शक्ति रूप तथा नर रूप) लीला करते हुए मंत्रमुग्ध कर देते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि 'शिव परिणय' शिव—भक्त कृष्ण राज़दान के निजी विश्वासों के अनुरूप सर्वशक्तिमान ब्रह्म की व्यक्त लीला है। वही शिव जो जगत का मूल कारण है, सौन्दर्य का सार और आनन्द का स्रोत है तथा शैवमत अनुयायी भक्त—जनों की भक्ति का ठोस आधार है, इस लीला जगत में व्यक्त होकर शक्ति के संग प्रकृति के कण—कण में अपने सौन्दर्य का विस्तार पाता है। 'शिव परिणय' में शिवभक्त अपने विश्वासों के अनुरूप ही अपने इष्ट के प्रति समर्पित रहता है। न केवल भक्तजन अपितु असंख्य देवी—देवता शिव स्तुति में लीन दिखाई देते हैं। इन में उल्लेखनीय हैं — विष्णु, ब्रह्मा, धर्मराज—यमराज, सुरपति, सप्तऋषि, वरुण देव, चित्रगुप्त, सूर्य देव, चन्द्रमा, लक्ष्मी, सरस्वती, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर तथा नारदमुनीश्वर।

4. 'शिव परिणय' की कई लीलाओं और स्तुतिपरक गीतों में विशिष्ट दार्शनिक पृष्ठभूमि पर गहन विचारों की अभिव्यक्ति अत्यन्त कलात्मकता के साथ हुई है। अद्वैतवादी विचारधारा से प्रभावित कवि अन्तिम क्षणें में जगतमिथ्या के बोध से पीड़ित होकर जीव को

सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने के लिये तथा पंच इन्द्रियों को अपने वश में करने के हेतु सावधान करते है। अपने आप को पहचान कर लक्ष्य प्राप्ति के हेतु साधनारत रहना जीव के लिये परमावश्यक है। मानस के तमसान्धकार को तो ज्ञान—ज्योति से ही प्रज्वलित किया जाता है। विवेक बुद्धि का अपना महत्त्व है अवश्य क्योंकि हंस बुद्धि से ही कांच और कंचन की पहचान सम्भव है।

5. कई पौराणिक कथा सन्दर्भों के आधार पर कृष्ण जू ने 'शिव परिणय' की कथा को सम्यक् विस्तार प्रदान किया है। इन पौराणिक सन्दर्भों अथवा मिथकीय पात्रों के द्वारा कवि लोक मिज़ाज के अनुकूल शिव—पार्वती की कथा को एक नवीन आकार प्रदान करने में सफल हुए हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि जीवन के किसी भी मोड़ पर अपनी परम्परा से अलग होना घातक सिद्ध होता है। यहाँ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि परम्परा और अन्धविश्वास एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न और अलग हैं। जहाँ हम अपनी परम्परा से अलग हो जाते हैं वहाँ हम अपनी पहचान खो देते हैं। पौराणिक कथाएँ, सन्दर्भ और पात्र आजभी हमें अपने अतीत के साथ जुड़ने और वर्तमान के साथ जूझने में आत्मिक शक्ति प्रदान करते हैं। प्रस्तुत रचना में उमा के नामकरण से सम्बन्धित कथा, प्रह्लाद की कथा, विष्णु की शिव भक्ति, यमराज—धर्मराज की शिव स्तुति, हर्षेश्वर की कथा, शिव द्वारा गौरी का प्रेम—परीक्षण, जोगी और पार्वती के बीच बहस, अरुंधती तथा नारद जी द्वारा विवाह प्रस्ताव लेकर हिमालय के घर जाना, मीनावती का क्रोध, विवाह एवं 'वनवुन' गीत, अतिथि सत्कार, स्वर्ण हिमपात, शिव और विष्णु की अद्वैतरूप में पूजा, शिवरात्रि दर्शन तथा भस्मासुर की कथा इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। इतना ही नहीं सम्पूर्ण कथा में नारदमुनीश्वर की भूमिका भी पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है।

6. कश्मीर के महान शैवाचार्य, दर्शनिक, आलोचक तथा काव्य—शास्त्र के आचार्य अभिनवगुप्त के प्रकाडं पाण्डित्य से प्रभावित होकर राज़दान साहब ने एक स्तुति गीत —

'सॉरी ह्यथ निम सर्व व्वपकॉरी,
अभिनव गुप्त आचॉरी ज़न'(23)

हिन्दी अनुवाद

सर्वोपकारी! सब के संग ले चल मुझ को
अभिनवगुप्त आचार्य सदृश।

लिखा है और इस प्रकार 'तंत्रालोक' तथा 'अभिनवभारती' के रचयिता की असाधारण प्रतिभा के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किये हैं। श्री पी॰एन॰ कौल बामज़ई अपने चर्चित इतिहास ग्रन्थ में लिखते हैं:— 'अभिनवगुप्त (जन्म सन् 950 ई॰ और 960 ई॰ के मध्य) कश्मीर शैव दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य, सांस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित एवं महान शिवभक्त। इन की प्रसिद्ध रचना है:— 'तंत्रालोक'। 'अभिनवभारती' में इन्होंने रस का शास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत किया है। विश्वास किया जाता है कि कश्मीर में गुलमर्ग मार्ग पर स्थित मागाम गाँव के पास एक गुफ़ा में अपने 1200 शिष्यों के साथ समाधिस्थ हुए।'(24)

कहने का अभिप्राय यह है कि केवल पौराणिक सन्दर्भ ही नहीं अपितु शुद्ध ऐतिहासिक सन्दर्भ एवं पात्र भी 'शिवपरिणय' के कथा विस्तार में सहायक सिद्ध हुए हैं।

7. राज़दान साहब ने 'शिव परिणय' की कुछ लीलाएँ खड़ी बोली में लिखी हैं और कुछ लीलाएँ खिचड़ी भाषा में। खड़ी बोली और कश्मीरी का मिश्रित रूप इन लीलाओं को अभिव्यक्ति कला की दृष्टि से आकर्षक बना देता है। प्रयोगात्मक स्तर पर इन रचनाओं का ऐतिहासिक महत्त्व है।

कृष्ण जू राज़दान का लीला काव्य

पण्डित कृष्ण जू राज़दान ने सैंकड़ों लीलाएँ सगुण कृष्ण के मनमोहक छवि—चित्रों को साकार रूप प्रदान करने के लिए लिखी हैं। प्रोफ़ेसर जे॰एल॰ कौल के विचारानुसार इन लीलाओं में रहस्य तत्त्व एवं दर्शनिकता अपेक्षाकृत कम है। ये लीलाएँ माधुर्य गुण से ओत प्रोत हैं। (25) इन लीलों में कृष्ण की बाल्यावस्था से लेकर राज्य प्राप्ति तक के सुन्दर चित्र देखने को मिलते हैं। ज़सोदा और नन्द बाबा के प्राण प्रिय माखन चोर के नटखट जीवन से सम्बन्धित अनेक छविवित्र उन्होंने बड़ी तन्मयता के साथ प्रस्तुत किये हैं। (26) इन लीलाओं में लोक जीवन के अनेक सौन्दर्य—बिम्ब साकार हो उठे हैं। नाद सौन्दर्य की दृष्टि से भी इन लीलाओं का अपना विशेष महत्त्व है। संगीत के साथ पण्डित जी को विशेष लगाव था। वे स्वयं एक अच्छे गायक थे और प्राय: अपनी रचनाएँ गा कर सुनाते थे। मस्त होकर गाने के साथ नृत्य भी करते थे जो वास्तव में वज्द अर्थात् आनन्दाधिक्य से आत्मविस्मृति की अवस्था को द्योतित करता

है। किसी भी कश्मीरी भक्त कवि में लोक संगीत के साथ इतना आकर्षण नहीं रहा है जितना पण्डित कृष्ण राज़दान को था। बहते झरनों के झरझर में, वेगवान पवन के साँय–साँय में, पक्षियों के कलरव में, पत्तों की सरसराहट में और नदियों की कल–कल ध्वनि में उन्हें कृष्ण बाँसुरी का नाद सुनाई देता है। वस्तुतः सम्पूर्ण प्रकृति को कृष्णमय देख कर वे रस छलकाते आत्मविभोर हो उठते हैं।

'लीला' वस्तुतः आत्मनिवेदन प्रधान भक्तिपरक रचना है जिस में भक्त अपना सर्वस्व इष्ट चरणें पर निछावर करके अद्भुत आनन्दाभास से प्रफुल्लित हो उठता है। वह भीतरी आनन्दानुभति को शब्दों का परिधान पहना कर जन–मानस के साथ जोड़ने का प्रयास करता है।

संगीत लीला का मुख्याकर्षण है। चाहे लोक संगीत हो या शास्त्रीय संगीत – लीला संगीत के साँचे में ढल कर परब्रह्म की 'जगत सृष्टि लीला' में 'मानव भावानुभूति लीला' के रूप में समानान्तर रूप से लघु नदिका समान प्रवाहित होती है। प्रकृति के नानारंगी सृष्टि–सौन्दर्य में चिरस्थायी सौन्दर्य के सम्मुख क्षण–स्थायी मानव सर्जन के सौन्दर्य कण बिखेरती हुई लीला भक्त जनों को मुग्ध कर देती है।

'लीला' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – क्रीड़ा, केलि, विलास, सौन्दर्य, शृंगार चेष्टा, प्रेमी का अनुकरण अथवा अवतारों के चरित्र का अभिनय। (27) लीला का लीलानन्द के अतिरिक्त और कोई प्रयोजन नहीं। देखा जाये तो यह चराचर सृष्टि भी ईशलीला है। एक से अनेक होने का संकल्प फलतः सृष्टि विकास। सृष्टि सच्चिदानन्द ब्रह्म की सत् अशं रूपा है जो सत्त्व, रज और तम तीन गुणों से मिलकर बनती है। (28)

सगुण अवतार रूप श्रीराम और तत्पश्चात् प्रमुख रूप से श्रीकृष्ण के जीवन से जुड कर भाव भेद के अनुसार लीला ने अनेक रूप धारण किये जैसे वात्सल्य लीला, बाल लीला, किशोर लीला, माधुर्य लीला, प्रीति अथवा अनुराग लीला, मान लला, ऐश्वर्य रूप लीला आदि।

एक लीला में सर्जनात्मक रचना के रूप में निम्नलिखित तत्त्वों का होना आवश्यक है :

1. अनुरागजनित भावानुभूति
2. सघन ईशानुराग
3. पूर्ण समर्पण भाव

4. अलौकिक शक्तियों एवं क्षमताओं का स्तुतिवन्दन प्रभुगुणगान
5. विचार गरिमा
6. लोकरस की फुहार एवं जनमानस का आकर्षण
7. संगीत माधुर्य, गेयता की प्रधानता
8. माधुर्य मिश्रित अभिव्यक्ति
9. अश्रुसिक्त अथवा अनुराग तप्त शब्द—व्यवस्था
10. छन्द व्यवस्था एवं तुकान्त पद—रचना

कश्मीरी 'शब्द कोश' में 'लीला' की परिभाषा देते हुए लिखा गया है —'वह गायन या नज़्म जिस में किसी अवतार आदि का गुण गान हो।'(29) खेल, क्रीड़ा आदि अर्थ भी दिये गये है लेकिन मैं नहीं समझता हूँ कि कोश—पण्डितों ने लीला की अन्तरात्मा को व्यक्त करने का प्रयास किया है।

लीला हर यगु के मनुष्य की कविता हो सकती है। आज के कवि के पास चाहे उचित भाषा हो या न हो इस का लीला के सर्जन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, यह व्यर्थ का विवाद है क्योंकि लीला जन मानस की उपज है और कोई भी समकालीन रचनाकार जनमानस से बड़ कर नहीं है। जैसे भाषा, बोली के रूप में जन—सम्पत्ति है किसी लेखक या भाषा—वैज्ञानिक की नहीं वैसे ही आज कश्मीरी भाषा में लीला लोक जीवन में रस घोलती हुई ऐतिहासिक दुर्घटनाओं और राजनीतिक षड्यंत्रों से त्रस्त, भयाक्रान्त लोक मानस के लिये संजीवनी है।

लीला काव्य की सम्यक् जानकारी देने के बाद पुनः पण्डित कृष्ण जू राज़दान की लीलाओं पर विचार किया जाये गा। पण्डित जी कश्मीरी साहित्य के इतिहास में एक चर्चित लीला कवि माने जाते हैं। उनकी लीलाओं का प्रमुख आधार श्रीकृष्ण है। उन्होंने सैंकडों लीलाएँ लिखी हैं जिन्हें मुक्तक वर्ग के अन्तर्गत अध्ययन की सुविधा के हेतु रखा जा सकता है। उचित यही होगा कि उनकी प्रमुख लीलों से चन्द उदाहरण प्रस्तुत करने के बाद इस विषय पर कृष्ण जू राज़दान के सन्दर्भ में विचार किया जाये। उनकी कृष्ण लीलाओं के चन्द सौन्दर्भ—चित्र इस प्रकार हैं :—

1. —'बालु कृष्णंस छस ब्व प्रारान छ़ालु मारान यीना
बंसरी छस कन ब्व दारान शब्द बूज़िथ मतु ना
जसुदा छस पतु लारान छ़ालु मारान यीना।'(30)

हिन्दी अनुवाद

—'बाल कृष्ण की है प्रतीक्षा, उछल कूद कर आजाते

बाँसुरी नाद पर ध्यान धारती हूँ क्यों न बौराऊं नाद सुनते
पीछे दौड़ती है जसोदा, उछल कूद कर आजाते।'

2. 'बालक अवस्थायि लग्यो लोलो
मनु मंज़लिस मंज़ कॅर्य हो हो
वसुदेव निस निनसुई लग्यो
गोकुल ह्यथ यिनुसुई लग्यो
जसुदायि द्वद चनुसुई लग्यो
मनु मंज़लिस मंज़ कॅर्य हो हो।'(31)

हिन्दी अनुवाद

'बालक अवस्था पर मैं बलिहारी
मन–हिंडोले में दुलराऊं
वासुदेव निकल पड़े हैं तुझ को लेकर, मैं बलिहारी
गोकुल जा पहुँचे तुझ को लेकर, मैं बलिहारी
जसोदा माँ का दूध पिया, मैं बलिहारी
(उछल कूद कर) मन–हिंडोले में दुलराऊं।'

3. 'मोरली शब्द असि गव कनन वनन छि राधाकृष्ण हय आव
जसोदा छय नन्द गूरिस वनन ज़गत यस ज़ाव सुय असि ज़ाव
ऑस मुचरोवमस आश्चर छु नॅनन वनन छि राधा कृष्ण हय आव।'(32)

हिन्दी अनुवाद

–'कानों में गूँज उठा है मुरली नाद
कहते हैं राधा कृष्ण पधारे हैं।
नन्द ग्वाल से जसोदा बोली
जन्मा है जगत जिसे वही जन्मा हमारे घर
मुख खोला जब उसका हुआ आश्चर्य
कहते हैं राधाकृष्ण पधारे हैं।'

4. 'आव हय नन्द लाल बिन्दराबन
सुत्य गूपियन गिन्दने
टॉठ राधा छस क्रेशान तस छु आमुत वुछने
मथरायि त्रॉविथ रुक्मण सुत्य गूपियन गिन्दने
पूतनायि दोप द्वद ब्व चावन ज़हर बॅबु लॉज बरने
अकि दाम गयि अथ हावान सुत्य गूपियन गिन्दने।'(33)

हिन्दी अनुवाद

–'नन्दलाल आये हैं वृन्दावन (रास) खेलने गोपियों के संग

तड़प रही थी प्रिया राधा, उसे देखने आये हैं
छोड़ मथुरा और रुक्मण (रास) खेलने गोपियों के संग
पूतना ने सोचा दूध पिलाऊं विषधारण किया स्तनों में
एक चूस(34) से निकले उसके प्राण, रास खेलने गोपियों के संग नन्लाल आये हैं वृन्दावन।'

5. —'शामु कॉल्ग गूरि बालकन सुत्य कमि हाल्ग
वुछ यिवान शामु लाल कामुधीनु ह्यथ।'(35)

हिन्दी अनुवाद

'जाने किस हाल में! सायम् ग्वाल बालों के संग।
आते देखा श्याम लाल को कामधेनुओं को साथ लिये।'

6. —'लाल्ग यितु साल्ग प्याल्ग हो बरयो
माल्ग करै माल्ग हो करयो।'(36)

हिन्दी अनुवाद

—'प्रिय! निमंत्रण है मेरा
मैं भरपूर आतिथ्य सत्कार करूँगी
मालाएँ तैयार रखूँगी
हाथों हाथ लूँगी।'

7. —'छस ब्व राधा कृष्ण नावस कल्गवन्दनुय यियी ना
च्यथ मे न्यूनम नन्द गोरिन अकुनन्दनुय यियी ना
जसोदानन्द आनन्द कन्द गोविन्दनुय मन न्यूनम
निर्द्वन्द्वनुय, न्यस्पन्दनुय, नादब्यन्दु नुय मन न्यूनम
प्रेम ज़ालस मंज़ लागान वाति कुस तस फन्दुनुय
च्यथ मे न्यूनम नन्द गोरिन अकुनन्दनुय यि यीना।(37)

हिन्दी अनुवाद

'मैं राधा कष्ण नाम पर बलिहारी, काश! आजाते!
चितचोर पिया, नन्द ग्वाल के अकनन्दुन आ जाते!
जसोदानन्द, आनन्द कन्द गोविन्द ने मन मोह लिया
निर्द्वन्द्व ने, निस्पन्द ने, नाद बिन्दु* ने मन मोह लिया
प्रेमजाल मैं जो उलझाता समझेगा फन्द उसके कौन?
चितचोर पिया, नन्द ग्वाल के अकनन्दुन आजाते!'

*पारिभाषिक शब्द—भ्रूमध्य

वात्सल्य रस से ओत प्रोत उन की एक लीला में व्यग्र जसोदा की रूला देने वाली प्रतीक्षा असहनीय व्यथा से विह्वल कर देती है (बाल

कृष्णस छस ब्व प्रारान — उद्धरण संख्या—1 देखिये) मन के हिंडोले में दुलारने की बलवती इच्छा भक्त कवि के मानस में आनन्द—स्रोतस्विनी प्रवाहित कर देती है। वह तो प्राणप्रिय की हर अदा (मोहक चेष्टा) पर सौ सौ बार बलिहारी है। (बालक अवस्थायि लग्यो लोलो — उद्धरण संख्या-2 देखिये) मात्र मुरली की तान सुन कर भक्त जन अपना सर्वस्व निछावर करने के हेतु निकल पडते हैं। उस क्षण 'लोक—लाज' शब्द भी अपनी अर्थवत्ता खो देता है। जसोदा कुछ कुछ इस तथ्य से परिचित् है कि 'जन्मा है जगत जिस से वही जन्मा हमारे घर।' यही बात तो वह अपने पति नन्दग्वाल से अत्यन्त भोलेपन के साथ तब कह देती है जब गोकुल के हर गोशे में मुरली की मधुर तान गूँज उठती है। (मोरली शब्द असि गव... उद्धरण संख्या-3 देखिये)

गोपियों से सम्बन्धित कृष्ण प्रेम के दो महत्त्वपूर्ण आयाम हैं एक है इस का अलौकिक पक्ष और दूसरा लौकिक पक्ष। लौकिक पक्ष में जीवन जीने की धड़कनें साफ़ सुनाई देती हैं। यहाँ आकर्षण के डोर में बन्ध जाने की बलवती इच्छा है, दो से एक होने की लालसा है, प्राणप्रिय पर निछावर होने का दृढ़ संकल्प है, निष्ठुर पिया से बतियाने और आँखों आँखों में सब कुछ कहने, सुनने और समझने की तमन्ना है। ऐसी विकट स्थिति में साजन और सजनी के मध्य सखी का प्रसंग महत्त्वपूर्ण होने के साथ साथ हिया की बात पिया तक पहुँचाने का साधन भी तो है। (आव हय नन्द लाल् बिन्दराबन —उद्धरण संख्या—4 देखिये)

मैं भरपूर आतिथ्य सत्कार करूँगी प्रिय! निमंत्रण है मेरा।' बस और कहने की आवश्यकता नहीं क्योंकि साहस और धैर्य के बान्ध टूट रहे हैं, प्रतीक्षा के क्षण जानलेवा बन गये हैं, हृदय में शूल चुभ रहे है और आँखें लगभग पथरा गई हैं — बाट जोहते। अतः केवल संकेत ही पर्याप्त है। (लाल् यितु साल् प्याल् हो बरयो... उद्धरण संख्या -6 देखिये)

गोकुल में राधा प्रसंग भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गोकुल के समीप बरसाने गाँव के गोपराज वृषभान की कन्या राधा कृष्ण की चहेती है। बाल्यावस्था में ही एक दूसरे के सम्पर्क में आकर चंचल, चतुर और विनोद प्रिय राधा कृष्ण को अपने आकर्षण के डोर में बान्ध देती है। इस प्रसंग को यदि लौकिक दृष्टि से ही देखा जाये तो अत्यतं आकर्षक प्रतीत होगा। राधाकृष्ण के अथाह प्रेम में निमग्न है और कृष्णमय होने के लिये अत्यन्त आतुर। चितचोर पिया को

'नन्दग्वाल का अकनन्दुन' कह कर राज़दान साहब ने इसे एक सुदृढ़ लोकाधार प्रदान करने का प्रयास किया है। राधा सब कुछ दाँव पर लगा लेने के लिये तत्पर है क्योंकि उसका हृदय परवश है। देखा जाये तो यह परवशता ब्रह्म के प्रति जीव की है, इष्ट के प्रति भक्त की है अथवा असीम के प्रति ससीम की है। (छस ब्व राधा कृष्णनावस...उद्धरण संख्या—7 देखिये)।

रास लीला

पण्डित कृष्ण जू राज़दान ने अत्यन्त आकर्षक रास—लीलाएँ लिखी हैं। इन लीलाओं में रासनृत्य का नाटकीय चित्रण वस्तुतः कृष्णमय होने की अवस्था का यथार्थ बोध है।

'रास' संस्कृत भाषा का शब्द है और इस शब्द का अर्थ है — शब्द, ध्वनि, कोलाहल, नृत्य क्रीड़ा आदि। कृष्णलीला के अभिनययुक्त नाटक को भी रास कहते है।

'रास' लीला में चार प्रधान तत्त्वों का होना आवश्यक है :

(1) गीत (2) संगीत (3) वाद्य (4) नृत्य

अतः हम कह सकते हैं कि

गीत + संगीत + वाद्य + नृत्य = राम

रास क्रीड़ा करने वालों का वृत्ताकार समूह 'रासमंडली' कहलाती है। अर्थात् रास धारियों की टोली 'रास मंडली' कहलाती है।

राधा तथा गोपियों के साथ कृष्ण की श्रृंगार पूर्ण क्रीड़ाओं का नाम ही रासलीला है।

कृष्ण चरित का अभिनय करने वालों अर्थात रास धारियों का कृष्ण लीला सम्बन्धी अभिनय भी रास कहलाता है।

जो रास मंडली का प्रमुख आकर्षण होता है अथवा जो रास—नृत्य का नेतृत्व करता हुआ प्रिय जनों के साथ रास खेलता है उसे ही रासबिहारी कहते हैं।

रास लीला को हम लोक—नाट्य की कोटि में रख सकते है जिसमें अभिनय के आकर्षण के साथ साथ नृत्य का उल्लास भी रहता है। भक्त अपने भीतरी आनन्द तत्त्व को रास के द्वारा जाग्रत करता है।

श्रीकृष्ण से सम्बन्धित दो प्रकार की लीलाएँ उल्लेखनीय हैं:

(1) कुंज लीला (2) निकुंज लीला

कुंज लीला में क्रीड़ा का आलम्बन श्रीकृष्ण एवं आश्रय गोपबाल एवं

गोपियाँ होती हैं। इस लीला का प्रमुख आधार श्रीकृष्ण प्रेम है। कुछ लोग इसे **ब्रज लीला** भी कहते हैं। निकुंज लीला अत्यंत रहस्यमय होती है। इस में नित्यमिलन की बलवती इच्छा से प्रेरित होकर तथा अपने और पराये के भेद को पूर्णत: भुला कर अखण्ड आनन्द प्राप्ति के उद्देश्य से रास धारी रसमगन होजाते हैं। यह वह स्थिति है जहाँ से वापस लौट आना सम्भव नहीं होता। निकुंज लीला में जिस आनन्द की प्राप्ति होती है उसे 'वृन्दावन रस' कहते हैं। रास इसी निकुंज लीला के अंतर्गत माना जाता है। श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व बहुआयामी (Multi Dimensional Personality) है। प्रमुख रूप से कृष्ण व्यक्तित्व के निम्न लिखित दस छविचित्र हैं :—

1. बाल कृष्ण

नन्द
जसोदा > गोप, गोपा

2. रसेश्वर कृष्ण

प्रेम लक्षणा भक्ति का आधार

(i) ग्वाल सखा कृष्ण
(ii) गोपियों का मनमीत कृष्ण
(iii) राधा का दुलारा कृष्ण
(iv) रास बिहारी कृष्ण

लीला मगन कृष्ण

(i) बाल लीलाएँ
(ii) किशोर लीलाएँ (कुंज लीलाएँ)
(iii) रास लीलाएँ (निकुंज लीला)

3. असुरों का संहारक कृष्ण
4. मित्र कृष्ण (यारों का यार — सुदामा प्रसंग)
5. सफल राजनयिक कृष्ण (Successful diplomat)
6. लोक नायक कृष्ण (Successful Public Figure)
7. महान चिन्तक विचारक कृष्ण — श्रीमद्भगवद् गीता में कृष्ण
8. त्रिकाल द्रष्टा श्रीहरि कृष्ण — श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय—10-11
9. द्वारिकाधीश कृष्ण
10. गृहस्थ कृष्ण — आठ पटरानियाँ

रास भूमि पर रास—मंडल की परिधि में रास'—विलास में निमग्न रास—बिहारी की मनमोहक छवि कवि कृष्ण राज़दान को अधीर बना देती है। यहाँ अत्यतं सहजता एवं निश्छल भक्ति भाव से प्रेरित भक्त अपने प्रिय में लय होने का प्रयास करता है। जहाँ परमान्द की लीलाओं में गहन—चिन्तन एवं गूढ़ विचारों की प्रधानता है वहाँ कृष्ण

राज़दान की रास लीलाओं में एक रससिक्त भक्त—हृदय की विशुद्ध प्रेमाभिव्यक्ति साकार हो उठी है। रास का मुख्याकर्षण संगीत एवं नृत्य है। इस में प्रेम की उष्णता और लय होने की उत्तेजना एक साथ देखने को मिलती है। रास में लीन होकर बिन्दु अपने क्षुद्र अस्तित्व को सिन्धु में विलीन कर देता है। यह अलौकिक आनन्द की स्थिति है। डॉ॰ शशिशेखर तोषख़ानी के शब्दों में — 'रास कृष्ण राज़दान के गीतों में एक उदात्त अतीन्द्रिय उल्लास के रूप में बिम्बित है — देश, काल की लघु सीमाओं में न समाने वाली एक ऐसी घटना जो 'मन वृन्दावन' में नित्य घटित होती है...।'(38) गोपीनाथ की नृत्यमगन मुद्रा का एक आकर्षक दृश्य चित्र देखने योग्य है—

—'सॅमिव करव अथवास पॅकिव रास गिन्दॉने
श्य र्‌यथ साँपुन कुनी रात गोपीनाथ नचुनि लोग
वहर दोह गव पॅहर मास पॅकिव रास गिन्दॉने।'(39)

हिन्दी पद्यानुवाद

—'यकजा हो जाओ, मिला के हाथ परस्पर
चलो रास खेलने चलें।
इक रात हुई छः मास जब गोपीनाथ नृत्यमगन हुए
दिन भये साल और पहर हुआ मास
चलो रास खेलने चलें।'

अर्द्धरात्रि में उनींदी आँखों से टोह लगती गोपियाँ उन्मत्त हो उठी। उन्हें तलाश है मनमोजी पिया की क्योंकि रास मंडल के भीतर जब तक रास बिहारी की अद्‌भुत मुद्रा गतिमान न हो तब तक तो सब कुछ सूना सूना लगता है और जीवन कान्तिहीन:

—'कृष्णास छारान ॲस्य गयि मच़ै
न्यॅसुफ शबन न्यन्दरे हच़ै
नच़न नच़न वनान छि वच़न
अन्दस तु मंज़स पानै छि नच़न
श्यामस छारान ॲस्य गयि छच़ै
न्यॅसफ शबन न्यन्दरे हच़ै।'(40)

हिन्दी पद्यानुवाद

पगला गई टोह लगाते कृष्ण की
हम, अर्द्धरात्रि में उनींदी आँखों से
नाच नाच के गीत गाती

स्वयं नाचती घेरे पर और मध्य में
रंग पड़गया फीका श्याम को ढूँढते ढूँढते
हम, अर्द्धरात्रि में उनींदी आँखों से
पगला गई टोह लगाते कृष्ण की।'

'लो-लो' गीत

'लो–लो' की लोकगीत शैली में लोक रंग अथवा स्थानीय रंग के साथ साथ पुष्टिमार्गीय कृष्ण भक्तों की माधुर्य भक्ति का रंग भी गहराया है। कृष्ण तो कृष्ण हैं – सत्, शिव और सुन्दरम् का सार, लौकिक जीवन का अलौकिक आधार, अद्‌भुत आत्म विश्वास का प्रवाहमय स्रोत, जीवन जीने का संकल्पबद्ध मधुर एहसासः

–'मन म्योन बिन्दराबन तु लोलो,(41)
आत्मरूप नारायण तु लोलो
कृष्ण नाव छु आनन्द गण तु लोलो
कृष्ण नाव छु म्ख्य भॅकत्यन तु लोलो
कृष्ण नाव छु प्राण प्रॉणियन तु लोलो,
कृष्ण नाव छु अन्न प्राणन तु लोले
कृष्ण नाव छु ऑरत्यन धन तु लोलो
मन म्योन बिन्दराबन तु लोलो।'(42)

हिन्दी पद्यानुवाद

–'मन मेरा है वृन्दावन लो लो
आत्मरूप है नारायण लोलो
कृष्ण नाम है आनन्द गण लोलो
कृष्ण नाम है मोक्ष भक्तों को लोलो
कृष्ण नाम है प्राण प्राणियों में लोलो
कृष्ण नाम है अन्न प्राणों को लोलो
कृष्ण नाम है आर्तजन का धन लोलो
मन मेरा है वृन्दावन लोलो।।

मन मीत मन चुरा कर चले गये और आशिक़ तड़प कर रह गये। मन मसोस कर वे कहीं पुकार उठते हैं, कहीं चुप्पी साध लेते हैं और कहीं प्रिय की निष्ठुरतापर आह भर कर रह जाते हैं। भक्त की परवश होने की अवस्था का यह स्थिति–चित्र हृदयस्पर्शी होने के साथ साथ करुणापर है :

'रातस द्‌यन गव बस्तीयि वन गव
मन गव ह्यथ मन मोहननाथ
रावुन तु प्रावुन ज़न व्वपुरन गौ
अदु कुस र्‌यन गव रूज़िथ पथ
सानि म्वखु रायि रौस भूग भूगन गव
मन गव ह्यथ मनमोहन नाथ
निराकारु सुंद रूप त्रिभुवन गव
सर्व आकारु होवुन विश्व रूप
डींशिथ आश्चर्यस अरज़न गव
मन गव ह्यथ मन मोहन नाथ।'(43)

हिन्दी पद्यानुवाद

'रात भयो दिन और बस्ती बन गई वुन्दावन
मन मोहननाथ चुरा कर मन, चले गये।
खोना और पाना परजनों के लिये होगा
तब कौन सा ऋण रह गया शेष?
हेतु हमारे बिना भेदभाव के भोग भोगना होगा
मन मोहननाथ चुरा कर मन, चले गये।
निराकार रूप त्रिभुवन है
सर्वाकार में प्रकट हुआ विश्व रूप (विराट स्वरूप)
जिसे देख आश्चर्यचक्ति हुए अर्जुन
मन मोहननाथ चुरा कर मन, चले गये।'

इन लीलाओं का गहन अध्ययन करने के पश्चात् यह बात स्पष्ट होती है कि राज़दान साहब विष्णु के सगुण रूप पर आसक्त थे। यह सत्य है कि साधना पथ पर प्रकृति के अणु अणु में उन्हें शिव की ज्योति प्रतिबिम्बित दिखाई देती है लेकिन शिव केशव से भिन्न नहीं है। भक्त कवि निर्गुण विराट को सगुण साकार रूप में देखने के हेतु व्यग्र हैं। यहाँ वैष्णव भक्ति का माधुर्य उन के इष्टदेव शिव को समझने और शिवमय होने में सहायक सिद्ध हुआ है। इस प्रयास में वे सफल हुए हैं या असफल, सन्तुष्ट दिखाई देते हैं या विवश – यह विचारणीय है। वस्तुत: भक्त कवि राज़दान प्राणप्रिय में लीन होकर हर प्रवाहित स्रोत से अपनी प्यास बुझाना चाहते है। यह प्रयास उचित है या नहीं, क्या समन्वयवादी भक्त का कोई एकाधार हो सकता है, इस प्रकार के कई विचारणीय प्रश्न एक सजग समालोचक के मन-मस्तिष्क को अधीर कर देते हैं।

हिन्दी भजन

राज़दान साहब ने हिन्दी बोली में भी कुछ गीत और भजन लिखे हैं। यह सत्य है कि इन रचनाओं में पण्डिताऊ अथवा साहित्यिक हिन्दी का उलझा–सुलझा रूप देखने को नहीं मिलता लेकिन एक निर्मल कविहृदय की मार्मिक अनुभूतियों को मुखर कर देने वाली सरस अभिव्यक्ति अवश्य मिलती है। कहीं इन रचनाओं में शिव तो कहीं कृष्ण लीला मग्न दिखाई देते हैं। मैं चन्द उदाहरण प्रस्तुत करके इन भक्तिपरक रचनाओं पर अपने विचार व्यक्त करूँ गा :

1. –'फंस गये मोह जाल में हम तुझे आये शरण
सार इस संसार में कुछ नही चंचल है मन
क्या करे हमको अब काया और माया और धन
हम को अब निष्कल बनाओं जल्दी आओ मनमोहन
सार इस संसार में कुछ नहीं चंचल है मन।'
(पृ॰–468 कुलियात कृष्ण जू राज़दान)

2. 'जोगो जागो श्याम सुन्दर योगनिद्रा से
भोग लक्ष्मी ने बुलाया है
आप मोहन को मनाया है उस ने
आइये, बंसरी बजाइये आप
सोलह सिंगारों से राधा प्यारी ने सुन्दर बनाया काया है
उठो उठो श्रीधर मुरली मनोहर भगतों ने तुझ को बुलाया है।'
(पृ॰ 472-473)

3. –'मथुरा से बिन्द्राबन में आया
राध ने पाया मनमोहन।
गोपियों के भक्ति भाव ने सर उठाया
ज्ञान योग निद्रा में था नन्दलाल
राज गद्दी के आसन पर से उठाया
राधा ने पाया मनमोहन।
मीठा मीठा मक्खन जसुदा ने लाया
मोहन ने खाया भावना से
सब गोपियों ने भी उसको खिलाया
राधा ने पाया मन मोहन।'

(पृ॰ 470-471)

4. 'सबों को ले गया तनमन जो मोहन हो तो ऐसा हो
हुआ बैकुंठ बिन्दराबन जो नन्दन हो हो ऐसा हो
वही निर्मल वही निगुर्ण निरंजन हो तो ऐसा हो
ब्रह्मानन्द गण पूर्ण सुदर्शन तो ऐसा हो
हुआ बैकुंठ बिन्द्राबन जा नन्दन हो तो ऐसा हो।
जसोदा नन्द का प्यारा कुँआरा हो तो ऐसा हो
लड़कपन में फिरा बन बन नज़ारा हो तो ऐसा हो
हुआ बैकुंठ बिन्द्राबन जो नन्दन हो तो ऐसा हो।'
(पृ॰ 471-472)

5. 'कृष्ण तेरे ध्यान में बन गया बस्ती को बन
तुम हो मन और प्राण में ले मेरा अन्तः करण
एक अनेक ठीक तुमहो तुम से ही तीनों भवन
तुम ही हो पृथ्वी और जल, पवन, अग्नि और गगन
क्यों न नारद जी बनू गाऊँ तेरा श्री कृष्ण गुण
शुकदेव और व्यास बन के ध्यान धारूँ रात दिन
तुम हो मन और प्राण में ले मेरा अन्तः करण
पीते हैं अमृत धारा धोते हैं तेरे चरण
तुम हो मोह माया से न्यारा हम तुझे आये शरण
तुम हो मन और प्राण में ले मेरा अन्तः करण।'
(पृ॰ 466-467)

शिव भजन

6. 'काल के दण्ड से हम को बचाओं,
शिव! दिखलाओं शान्ति स्वरूप
झूठ कहने का न ताकत रखो
नित रखो हम को उत्तम विशेष
सत् चित्त आनन्द गण बनाओ,
शिव! दिखलाओं शान्ति स्वरूप
माया का वार्ता सम समझाओ,
जब कुछ नहीं तब क्यों है राग द्वेष
शिव निर्वाण सागर में डुबाओ,
शिव! दिखलाओ शान्ति स्वरूप।'
(पृ॰ 474-475)

राम भजन

7. 'भीलनी का झूठा मेवा राम जी ने खाया उत्तम पाया प्रेम से
भक्तों का प्रेम सबको दिखलाया, राम जी को किस चीज़
की है चाह
राजधानी छोड़कर बन में आना सच मान कर बाप की आज्ञा
ऐसा सतोगुण देवों ने गाया, उत्तम पाया प्रेम से
इन्द्रजीठ रावण को उड़ाया, दे गया विभीषण को
लंका राज
मन्दोदरी का पति बनाया, उत्तम पाया प्रम से।'

(पृ॰ 475-476)

8. 'काशी से कश्मीर मंडल में आया
गोकुल से लाये शुद्ध हुतशेष (कश्मीरी 'हुदुशीष')
सब बाल ग्वाल गोपाल पाये शेष गणेश ईश ब्रह्मा महीश
ब्रज वासियों का भक्ति योग गाये गोकुल से लाये शुद्ध हुतु शेष
बिन्द्राबन से उत्तम पाये गिरिजा का घर है कश्मीर देश
उत्तरवाहिनी गंगा में नहाये गोकुल से लाये शुद्ध हुतशेष।'

(पृ॰ 431-432)

उर्दू फारसी शब्द प्रयोग

9. 'छोडूँ परहेज़ संजीवन का दवा करो मुझ को
हिज्र का दरद है मिलने का शफ़ा करो मुझ को
नब्ज़ पर मेरे तुम अब दस्तेशिफा अपना रख
जो है तलवासि जिगर उससे छोड़ा कर मुझ को
मुझ को दरकार नहीं राज न यह तख़्त न ताज
मैं हूँ मुहताजि शफ़ा आज करपा कर मुझ को
बागि रहमत से मुझे ले दे के लियाक़त की बू
जिस्मोदिलो रूह दिमाग़म चौसबा कर मुझ को।'

(पृ॰ 478)

(नोट: मै ने गीतों को उसी रूप में प्रस्तुत किया है जिस रूप में कृष्ण जू राज़दान ने लिखे हैं। कोई पाठ शुद्धि का व्यर्थ प्रयास नहीं किया।)

मोहन के मनमोहक गुणों का उल्लेख करते हुए कवि वास्तव में अपने मानस के हर्षोल्लास को अभिव्यक्त कर रहे हैं। ल्यावस्था में लीला गान करते हुए अभिव्यक्ति जब पौराणिक सन्दर्भों के साथ जुड़ जाती हे तो कलात्मक स्वरूप धारण करने के साथ–साथ वैचारिक स्तर पर भी सारगर्भित हो जाती है। 'बिन्द्राबन' (वृन्दावन) का बैकुंठ हो जाना तो इसी स्थिति का परिणाम है। पण्डित कृष्ण जू राज़दान का समय 1850 ई॰ से 1926 ई॰ तक है। उन्नीसवीं शताब्दी और बीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों में हिन्दी भाषा का प्रयोग कश्मीर में कहीं कहीं भक्त कवियों के द्वारा हो रहा था। इस का एक कारण यह है कि संस्कृत भाषा के पठन–पाठन की एक स्वस्थ परम्परा कश्मीर में प्रचलित रही है यद्यपि मुस्लिम शासन काल में शताब्दियों तक इस भाषा का प्रचार उसी गति के साथ न हो सका जैसा हिन्दू राज काल में हुआ था। कश्मीरी भाषा मूलतः वैदिक संस्कृत से उद्भूत एक आधुनिक आर्य भाषा है। ग्रियर्सन के भ्रम को नकार कर हमें वस्तु स्थिति के वास्तविक रूप पर विचार करना चाहिये। क्योंकि मूलाधार वैदिक भाषा रही है अतः आज भी हज़ारों वैदिक भाषा के शब्द तत्सम, तद्भव अथवा अर्द्धतत्सम रूप में कश्मीरी भाषा में पाये जाते हैं। वास्तव में शताब्दों तक निरंतर दासता की विवशता झेलते हुए भी हम अपनी परम्परा और मूल स्रोत से अलग नहीं हो सके हैं ऐसा होना भी सम्भव नहीं था। विदेशी सत्ता के सांस्कृतिक आक्रमण को झेलते हुए भी हम ने अपनी परम्परा को किसी भी तरह से बचाने का प्रयास किया है। लल्लेश्वरी के युग से कृष्ण जू राज़दान के युग तक हम निरन्तर अपने सांस्कृतिक शक्ति स्रोत से शक्ति कण ग्रहण करते रहे हैं। पण्डित कृष्ण जू राज़दान का खड़ी बोली हिन्दी काव्य उसी का परिणाम है। मुझे इस बात का पूरा एहसास है कि कृष्ण जू कोई भाषा पण्डित नहीं थे। पंजाबी, उर्दू और फारसी से वे काफ़ी प्रभावित रहे हैं। उस युग में भी अविभाजित पंजाब से लोगों का आना जाना कश्मीर में लगा रहता था। अतः इन लोगों के सम्पर्क में आकर राज़दान साहब ने इन की भाषाओं के प्रभाव को स्वीकारा है और ल्यावस्था में अथवा आनन्दावस्था (वज्द) में वे कश्मीरी के बदले हिन्दी, हिन्दुस्तानी यहाँ तक कि उर्दू भाषा में भी लीलाएँ लिखने लगे। इन हिन्दी–हिन्दुस्तानी बोली में लिखी गई लीलाओं में निम्न लिखित विशेषताएँ देखने को मिलती हैं :

(1) पूर्ण समर्पण भाव एवं आत्म निवेदन

(2) कृष्णानुराग एवं माधुर्य भक्ति
(3) शिवाराधना एवं दास्य भाव
(4) ईश वन्दना एवं स्तुति गीत
(5) लोक भाषा या खिचड़ी बोली का प्रयोग
(6) राधा—गोपी एवं राधा—कृष्ण प्रसंगों को लोक मानस के साथ जोड़ने का प्रयास।
(7) निर्मल कवि हृदय की मार्मिक अभिव्यकित

डॉ॰ शशिशेखर तोषख़ानी का विचार है कि कृष्ण राज़दान की हिन्दी में रचित पंक्तियाँ कश्मीरी में सोची हुई पंक्तियों का अक्षरश: अनुवाद है। डॉ॰ साहब इस सन्दर्भ में लिखते हैं —'कृष्ण राज़दान ने, परमानन्द की भाँति, बीस से अधिक गीत अटपटी हिन्दी में भी लिखे हैं। कश्मीरी में सोची हुई पंक्तियों का अक्षरश: अनुवाद तो इन में है ही, हिन्दी शब्दों का कश्मीरी उच्चारण और व्याकरण के अनुसार तोड़ा मरोड़ा भी गया है और पंजाबी शब्दों का भी खूब प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त कश्मीरी कविताओं में भी कहीं—कहीं इक्की—दुक्की पंक्तियाँ इस भाषा में कवि ने लिखी हैं।... इन को ज़्यादा से ज़्यादा, दिलचस्प प्रयोगों के रूप में ही लिया जा सकता है।'(44)

मैं डॉ॰ साहब के इस कथन से सहमत नहीं हूँ कि ये पंक्तियाँ 'कश्मीरी में सोची हुई पंक्तियों का अक्षरश: अनुवाद है।' यह बात सही नहीं है। हिन्दी रचनाओं के प्रणयन में भी उन की मौलिक सर्जनात्मक प्रतिभा का भरपूर योगदान रहा है। एक नहीं, अनेकों उदाहरणें द्वारा इस तथ्य की पुष्टि की जा सकती है। 'मथुरा से बिन्द्राबन में आया' रचना में उन का समन्वयात्मक दृष्टिकोण देखने योग्य है —

—'तुम हो सूरज हम हैं छाया, राधा ने पाया मनमोहन
तीनों लोकों में चर्चा थी घर घर, शंकर बन गया गोपीश्वर
रास में कैसे उल्लास बनाया, राधा ने पाया मन मोहन
कृष्ण ने राम भक्तों को समझाया, राम है कृष्ण कृष्ण है शंकर
राग में त्याग—गुल दिखलाया, राधा ने मन पाया मोहन
गोप ग्वालों ने धूम मचाया, आगया गोकुल में गोपीनाथ
अपने बाल बच्चों को बुलाया, राधा ने पाया मनमोहन।'(45)

इस प्रसंग को पढ़ कर मुझे नहीं लग रहा है कि यह 'कश्मीरी में सोची हुई पंक्तियों का हिन्दी अनुवाद' है। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि यह सर्जन-कार्य राज़दान साहब ने 19वीं शताब्दी के

अन्तिम काल खण्ड अथवा बीसवी शताब्दी के आरम्भिक दो दशकों में किया है। 'भारतेन्दु युग' में खड़ी बोली हिन्दी के प्रारम्भिक स्वरूप पर ध्यान देना आवश्यक होगा। यह वह यगु है जब यह कविता की भाषा नहीं थी और लगभग इसी युग में पण्डित कृष्ण जू राज़दान ने खड़ी बोली में रचनाएँ लिखी हैं। किसी भी अहिन्दी प्रान्त में इस प्रकार के प्रारम्भिक प्रयोग अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं। ये भाषा–विकास के साक्षी हैं, अत्यन्त मूल्यवान साक्षी। भाषा–वैनिक दृष्टि से पण्डित कृष्ण जू राज़दान की हिन्दी रचनाओं को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखने – समझने की आवश्यकता है। प्रयोगात्मक स्तर पर ये रचनाएँ पर्याप्त मूल्यवान हैं।

राज़दान साहब को फ़ारसी भाषा की सम्यक् जानकारी थी यही कारण है कि कुछ रचनाओं में उर्दू–फारसी शब्द–प्रयोग संयत रूप में देखने को मिलता है।

विस्तृत आकार की वर्णनात्मक रचनाएँ

पण्डित कृष्ण जू राज़दान ने विस्तृत आकार की वर्णनात्मक रचनाएँ भी लिखी हैं जिन में किसी दार्शनिक तथ्य की अभिव्यक्ति, किसी विचार खण्ड की विस्तृत विवेचना अथवा किसी अनुष्ठान से सम्बन्धित सामाजिक अथवा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की विचारणा (परीक्षण) भी हुई है। कहीं कहीं इन रचनाओं में प्रतीकात्मक प्रयोग भी हुए हैं और कहीं प्रकृति की पृष्ठभूमि पर जीवन की विशद्ध व्याख्य करने का प्रयास भी हुआ है। इन रचनाओं में उल्लेखनीय हैं:

1. (यमराज) 'धर्मराज की शिव अस्तुति' – पृ॰ 111
2. 'पुष्प पूजा एवं तीर्थों का वर्णन – पृ॰ 236
3. 'प्रभात काल की लीला' – पृ॰ 321
4. 'ओम् शब्द का गुण–कीर्तन' – पृ॰ 327
5. 'संसार के मिथ्या होने का उपदेश'– पृ॰ 338
6. 'भगवान कृष्ण अस्तुति –पृ॰ 379
7. 'प्रतीक्षा एवं विलाप' –पृ॰ 390
8. 'शिव लीला' –पृ॰ 404
9. 'समय को भाँड–जश्न समझ' पृ॰ 419
10. नारायण अस्तुति – पृ॰ 425
11. 'ज्ञान लीला' – पृ॰ 440 एवं पृ॰ 487
12. 'सन्तो की महिमा' –पृ॰ 526

13. 'कर्पूर गौरं करुणावतारं' —पृ० 583
14. 'मंज़ गाँव का चन्दन वृक्ष' —पृ० 568
आदि।

दार्शनिक विचार

पण्डित कृष्ण राज़दान के भक्ति काव्य में कहीं कहीं गूढ गम्भीर दार्शनिक तथ्यों एवं साधना की विभिन्न अवस्थाओं का सांकेतिक अथवा प्रतीकात्मक चित्रण हुआ हैं यहाँ उन की चिन्तना में कविहृदय का माधुर्य घुल गया है अवश्य, लेकिन प्रधान रूप से चिन्तन ही सहृदय पाठक को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। कविता एक विचार प्रधान रचना का रूप धारण कर जनमानस को चिनतन के लिये विवश करती हे। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी—काव्य के इतिहास में 'विचार कविता' के नाम से एक दिशाहीन प्रवृत्ति का विकास हुआ है। कृष्ण जू राज़दान ने बहुत पहले (20 वीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों में) ही विचार—प्रधान कविताएँ लिखकर कश्मीरी जनमानस को अपनी ओर आकर्षित किया है। इस प्रकार की विचारप्रधान कविताओं में 'आरु छु वुज़ान वॊगुन्य दरय' राज़दान साहब की एक बहुचर्चित रचना है जिस में कवि अपने तुच्छ अस्तित्व के प्रति सचेत होकर सागर के समान विराट परमसत्ता में विलीन होने के लिये लालायित दिखाई देता है। साधक के लिये साधना की विभिन्न स्थितियों को पार करना नितान्तावश्यक है। परंब्रहम के व्यापक अस्तित्व—बोध से प्रेरित कवि अपने दिशाहीन लघु एवं क्षीण अस्तित्व के मात्र एहसास से विचलित हो उठता है और ज्योतिकणों को समेटने की आकांक्षा से प्रेरित होकर लिखता है:

—'आरु छु वुज़ान वॊगुन दर्‌य वार छु करान शोर
छोपु छु करान समन्दरय ब्व कया करै ज़ोर
अन्दर च़ॊनिथ ज्ञान गरै हावुम चूरिम पोर
तथ मंज़ रूज़िथ आनन्द बरै ब्व क्या करै ज़ोर
कृष्णनस मुचुराव भावुक बरै कुनी वरै तोर
यथ लरि चुई ह्यथ बसु अम्बरै ब्व क्या करै ज़ोर।'(46)

हिन्दी अनुवाद

'ऊँचे दर्रे से प्रवाहित है कुल्या, स्पष्ट मचाती शोर
सागर चुप्पी साधे है, मेरे आग्रह का क्या महत्त्व!
भीतर ज्ञानगृह प्रवेश करादे, पहुँचा दे चौथे मंज़िल पर

वहीं रहूँ मैं आनन्द मग्न, मेरे आग्रह का क्या महत्त्व!
कृष्ण राज़दान के भाव गृह का, तोरण खोल इक झटके से
जहाँ वास हो अम्बर के संग मेरा, आग्रह का क्या महत्त्व!'

'अम्बर' के संग वास हो मेरा — यह वास्तव में ससीम की हृदयाकाक्षां है असीम में मिलन हेतु। 'अम्बर' यहां असीम का प्रतीक है और 'मैं' वास्तव में नश्वर जीव। चौथी मंज़िल वेदान्त—शास्त्र में वर्णित — जागरण, स्वप्न, सुषुप्त और तुरीय की ओर संकेत है। चतुर्थ अवस्थ है जिसे में आत्मा ब्रह्म में लीन हो जाती है। 'ज्ञान गृह' वास्तव में आत्मबोध की ओर संकेत है। कवि अद्वैत चिन्तन से प्रेरित अर्थगर्भित विचारों को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं :

'शिवुई छु कीशव तु कीशव छु शिवुई
थॅन्य ऑस अदु प्योस ग्यवुई नाव
आत्म द्वदस छय ब्यॊन ब्यॊन चालय
हाव श्यामु लालय श्रीरामु रूप
रामुय छु कृष्ण तु कृष्ण छु रामुय
असि बॅखती न्यष्कामुय कॅर
अद्वैत बावन कॅड मूह ज़ालय
हाव श्याम लालय श्रीरामु रूप।'(47)

हिन्दी अनुवाद

'शिव ही हैं केशव और केशव शिव हैं
पहले था माखन अब नाम पड़ा घी।
आत्म—दुग्ध के हैं भिन्नरूप
श्यामलाल! श्रीराम रूप में प्रकट हो जाओ
राम ही हैं कृष्ण और कृष्ण है राम
हम ने भक्ति की निष्काम भाव से
अद्वैत ने मोह जाल से उद्धार किया,
श्याम लाल! श्रीराम रूप में प्रकट हो जाओ।'

कश्मीर शैवदर्शन प्रेरित प्रभावित राज़दान साहब ने असंख्य रचनाएँ लिखी हैं। वे शिव के समर्पित भक्त हैं, मूलतः कश्मीरी शैव हैं। उन की विचार परिधि तथा चिन्तनक्षेत्र का केन्द्र बिन्दु शिव है। वह शिव जो शक्ति के संग मिलकर लीलामय जगत में अपने सौन्दर्य कण बिखेर देता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि कहीं भी उनका काव्य व्यक्तितत्व चिन्तन के भार से दब कर बोझिल नहीं हुआ है।

यहां भक्ति को हृदय का सरस सहयोग प्राप्त हुआ है, श्रद्धा में माधुर्य के कण घुलमिल गये हैं और ज्ञान के शुष्क रेगिसतान में प्यार की स्रोतस्विनी प्रवाहित हो उठी है। इन शिव लीलाओं में उल्लेखनीय हैं :

1. 'ब्यल तय मादल व्यनु गोलाब पम्पोश दस्तय
पूज़ायि लागस परमशिवस शिवनाथतय।
जटा मुकटु जटि गंगा वसान छस तय
दीवी तु दीवता व्यशनु ब्रह्मा छिस दस्त बस्तय
भक्ते भावु जयजयकार ऑसिन तस तय
पूज़ायि लागस परमशिवस शिवनाथतय।
पम्पोशि पदाव सुत्य यितम अस्तय अस्तय
चरनन वन्दय ज़ू तु जान ह्यथ वॉलिंज वस तय
रागु चानि सुत्यन पोन्य वुज़्यम नागरादस तय
पूज़ायि लागस परमशिव शिवनाथतय।'(48)

(पृ॰ 118-119)

हिन्दी अनुवाद

—'बेल, माधवी और वन्य सुगन्धित तृण—पत्ते
गुलाब और गुच्छे पद्म पुष्प के
परमशिव की पूजाहेतु, समर्पित हैं शिवनाथ पर।
जटाजूट की जटाओं से प्रवाहित गंगा
देवी देवता विष्णु—ब्रह्मा कर बद्ध खड़े हैं
भक्ति भाव से हो जय जय कार उनका
परमशिव की पूजाहेतु, समर्पित हैं शिवनाथ पर।
पद्म—चरणों से आ जाते धीरे धीरे
प्राण निछावर करदूँ चरणों पर वसा कलेजे के साथ
अनुराग वेग से प्रवाहित हो उठें गे जल स्रोत
परम शिव की पूजा हेतु, समर्पित हैं शिवनाथ पर।'

2. 'भाव पम्पोश फोलि प्रेमय सरसुई
शिव शंकर सुई छि पोशि पूज़ा।' (49)

हिन्दी अनुवाद

'भावनाओं के पद्मपुष्प खिले हैं प्रेम सरोवर में
शिव शंकर की है पुष्प पूजा।'

3. 'बालु छांडथ हरमोख बालु शम्भू
दितु हरणुनि छालु लोलु डालु शम्भू।'(पृ॰ 316)

हिन्दी अनुवाद

'हर मुकुट पर्वत पर खोज लूँ तुझ को शम्भु!
भर ले चौकड़ी हरिण की मधु—मुद्रा में शम्भु!'

4. 'रंग बुलबुल छुई जटाधॉरी, हॉरी कर चु पॉरीज़ान
गीरु रंगु छिस वस्त्र सॉरी, नौन होवुन ब्रह्मचॉरी पान
त्यागु मंज़य छुई व्यवहॉरी, हॉरी कर चु पॉरीज़ान।'(50)

हिन्दी अनुवाद

'जटा धारी है बुलबुल मन मौजी
मौना कर ले जान पहचान।
गेरुए वस्त्रधारी
व्यक्त हुए ब्रह्मचारी
त्याग में है व्यवहारी
मैना कर ले जान पहचान।'

5. 'कोफूर रंगु सफेद अंगु, लगय गंगु जटॉनुय
छुनमुत छुई चे वासुक हटि, रछिन मटि च्य सॉरी
आश छम गाश अन अनिगटि, लगय गंगु जटॉनुय।
हे परमशिवु परमानन्द बु चे वन्दु पनुनुई पान
मे ज़ोनुख नु छुस शरमन्दु, लगय गंगु जटॉनुय।
न्यराकारु न्यरंज़नु त्रिलोचनु छुख सोरुय
आनन्द गण वृषभासनु लगय गंगु जटॉनुय।'(51)

हिन्दी अनुवाद

'कर्पूर वर्ण श्वेतागं! गंग स्रोत जटाओं पर मैं बलिहारी।
गले में वासुकि धारण किये सब की रक्षा का भार लिये
आस है, अन्धकार में प्रकाश फैला, गंग स्रोत जटाओं पर मैं बलिहारी।
हे परमशिव परमानन्द मैं बलिहारी तुझ पर
नहीं पहचाना लुज्जित हूँ, गंग—स्रोत जटाओं पर मैं बलिहारी।
निराकार निरंजन त्रिलोचन! सबकुछ हैं आप
आनन्द गण वृषभासन, गंग—स्रोत जटाओं पर मैं बलिहारी।'

6. नॉल्य छय कपालु मालु शम्भू

साल् वल् त्रिज़गतपाल् शम्भू।'(52)

हिन्दी अनुवाद

'पहनी हैं कपाल मालाएँ शम्भू।
त्रिभुवन पाल! निमंत्रण स्वीकारो।'

7. 'यछ़ि चानि दानु दानु वचि सोनु शीनु मानि
हा गोसानि सानि सरतलि कर तु स्वन।
नंगु छुस लोगमुत मंज़ प्यववुनि शानि
ज़ंगु छम न किथु पॉठ पकु मंज़िलस
अंगहीनस मे श्राण करुनाव गंगुवानि
हा गोसानि सरतलि कर तु स्वन।'(53)

हिन्दी अनुवाद

—'तुम्हारी इच्छा से, परस्पर कण कण मिल कर,
स्वर्ण हिमानी हुए प्रवाहित
हे जोगी! हमारे पीतल को सोने में बदल दे।
अनवरत हिमपात में फसां हूँ मध्यमार्ग पर
सामर्थ्यहीन हूँ कैसे पहुँचू मंज़िल पर
मुझ अंगहीन को गंग—जल से नहला दे
हे जोगी! हमारे पीतल को सोने में बदल दे।'

स्वर्गीय मुहम्मद अब्दुलाह तिब्बतबक़ाल ने राज़दान साहब की चर्चित शिव लीला 'ब्यल तय मादल व्यनु गुलाब पम्पोश दस्तय' सूफ़ियाना तर्ज़ पर गायी है। यह शिव लीला जब रेडियो कश्मीर, श्रीनगर से प्रसारित हुई तो घाटी में जनमानस ने इस विभूति का स्वागत करते हुए तिब्बतबक़ाल साहब की कलात्मक अभिव्यक्ति को खुले दिल से सराहा। तिब्बतबक़ाल साहब कश्मीर के चर्चित सूफ़ियाना गायकों और साधको में एक थे और वर्षो रेडियो कश्मीर, श्रीनगर से सम्बन्धित रहे। इस में सन्देह नहीं कि तिब्बतबक़ाल साहब के अद्भुत माधुर्य सिक्त गायन ने बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कृष्ण राज़दान को पुनः जीवनदान प्रदान किया। श्री मुहुम्मद यूसुफ टेंग के शब्दों में —'जिन्होंने तिब्बतबक़ाल के मधुर कंठ से ये शब्द और भाव सुने, वे भाव—विभोर हो उठे और कृष्ण राज़दान को ढूँढने लगे।'(54)

वनवुन गीत

सहजता और सरलता कृष्ण राज़दान की भाषा का मुख्याकर्षण है। उन्हें न पाण्डित्य प्रदर्शन का मोह था और न अलंकृत भाषा के प्रति आग्रह। अभिव्यक्ति को सशक्त एवं ग्राह्य बनाने के हेतु कवि ने लोक में व्यवहृत मुहावरों, कहावतों और शब्द प्रयोगों के साथ—साथ नाना प्रकृति—दृश्यों का भी चित्रांकन किया है। लोक भाषा के साथ—साथ लोक संगीत के प्रति भी उन्हें विशेष रुचि थी। कश्मीर में प्रचलित लोक गीतों की विविध शैलियों से वे भली—भाँति परिचित थे। इन में विशेष कर 'वनवुन' गीत, 'शिव परिणय' में शिव—पार्वती के विवाह के अवसर पर गाये गये हैं। श्री मोतीलाल साक़ी के शब्दों में 'इन की अनेक लीलायें लोक साहित्य का अभिन्न अंग बन गई हैं और कश्मीरी पण्डितों के विवाह गीतों में सम्मिलित हुई हैं।' (55) स्पष्ट है कि राज़दान साहब अपने लोकजीवन के प्रति सचेत थे। उन्हें लोक पर अटूट विश्वास है। लोक मानस, लोक विश्वास, एवं लोक जीवन की पृष्ठभूमि पर ही तो 'शिव परिणय' का प्रणयन हुआ है।

कृष्ण राज़दान द्वारा रचित चन्द उल्लेखनीय 'वनवुन' गीत (विवाह गीत) इस प्रकार हैं :

1. पॉर्य पॉर्य लॅगितोस रथ सवारे
महाराज़ु राज़ु कुमारे आव।
सॉनिस पोशि बागस ओस गोशा
गोशस प्यठ पम्पोशा ब्यूठ
रोशि चाव पोशनूल मंज़ पोशिवारे
महाराज़ु राज़ु कुमारे आव।'(56)

हिन्दी अनुवाद

वलायें लें लूँ रथ सवारी की, पधारें हैं दूल्हा राज कुमारी के। हमारे अपवन में था एक गोशा, (एकांत स्थान) गोशे में पधारे पद्मपुष्प। (मस्ती में) धीमी चाल से पोशनूल (स्वर्ण पक्षी) उपवन में पधारे हैं दूल्हा राजकुमारी के।'

2. वनुवुनि अछ्रछ़ वछ़ स्वर्ग दारय
वारय करयो दारय पूज़।'(57)

हिन्दी अनुवाद

'वनवुन' गाने पहुँची अप्सरायें स्वर्गधाम से
अचिन्त विधि से करूँ द्वारपूजा।'

3. ओ३म् कर श्रुक पर श्री गणेशाय
पोशि पूज़ाये वेल हय वोत।'(58)

हिन्दी अनुवाद

ओम् श्री गणेशाय (नमः) श्लोक पढ़
पुष्पपूजा की वेला आ पहुँची

4. सोन्त आव बामन दराव होछि मचि हरे
बालादरि ब्यूठ बालमुकुन्द
तस रोस यि केंछा बासि सुय ति खरि,
कृष्णास् क्या करि व्यवहार ब्वद
शिव तु कीशव स्वरि यमि भवुसरु तरि,
बालादरि ब्यूठ बालमुकुन्द।'(59)

हिन्दी अनुवाद

—'बसन्तागमन पर फूटे कोंपल सूखी टहनी पर
बालमुकुन्द पधारे बारादरी पर
उस के बिना जो प्रतीत हो सो अच्छा न लगे
कृष्ण (राज़दान) को व्यवहार बुद्धि से क्या लेना?
शिव—केशव स्मरण से भवसागर पार उतर जाये गा
बालमुकुन्द पधारे बारादरी पर।'

तुम्बकनारी(60) का कश्मीरी लोक संगीत में विशेष महत्त्व रहा है। आज भी विवाह के शुभावसर पर कई दिनों तक महिलायें घर में तुम्बनारी बजा बजा कर विवाह गीत गाती हैं और अपने हर्षोल्लास को व्यक्त करती हैं। कश्मीर में लोक संगीतज्ञों ने इसे घड़े का पूरक मान कर पर्याप्त महत्त्व प्रदान किया है। दक्षिण प्रदेशों के शास्त्रीय संगीत गायक अपने कई वाद्ययंत्रों के साथ घड़े का प्रयोग भी करते हैं। कश्मीर में घड़ा और तुम्बकनारी लोक संगीत अथवा लोक गायन के महत्त्व पूर्ण वाद्य माने जाते हैं। राज़दान साहब ने 'शिव परिणय' में तुम्बकनारी के गीत जोड़कर वस्तुतः अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा को लोकमानस के साथ जोड़ने का भरसक प्रयास किया है।

वह अपने भीतरी आह्लाद को उत्सव के साथ जोड़ कर शिव–शक्ति के मिलन को प्रवाहित आनन्द स्रोतस्विनी के रूप में चित्रित कर रहे हैं। वस्तुत: ऐसा करके वे जनमानस के आन्तिरिक उल्लास को वाणी दे कर वातावरण को उत्सवानुकूल बना देते हैं। एक दो उदाहरण देखने योग्य हैं :—

1. 'होशि पोशिनूल वन वन—हारे
दयि गोन ग्यव प्यठ तुम्बकनारे।
रॉत रातस असि ह्योत ग्यवुनुई
ती बूज़ शिवनुय केशवनुय
अमर्यथ प्यव चव दारि दारे
दयि गान ग्यव प्यंठ तुम्बकनारे।
गट चॅज सिरियन होव दर्शुन
दर्शुन ओस अमर्यथ वरशुन
तमि वरशनु पोश फॊलि वारे
दयि गोन ग्यव प्यठ तुम्बकनारे।'(62)

हिन्दी अनुवाद

—'स्वर्ण पक्षी! सचेत कह वन्य—मैना से
गा ले देवगुण 'तुम्बकनारी' पर।
पूरी रात हम ने गुणगान किया
वही सुना शिव—केशव ने
अमृत प्रवाह हुआ हम ने बहती धारा से पान किया
गाले देवगुण तुम्बकनारी पर।
अन्धकार मिटा सूर्यदेव ने कृतार्थ किया
दर्शन ही था अमृतवर्षण
प्रफुलित हो उठी पुष्प वाटिकायें उस वर्षण से
गा ले देव गुण 'तुम्बकनारी' पर।'

2. (तुम्बकनारी बजा बजा कर दूल्हा शिव के हेतु गाया जा रहा 'वनवुन' गीत) —

—'हे! अघोर नील कंठ छुख हन हन तय, छुख हन हन तय
शिव रुप दॉरिथ बृषभासन तय, बृषभासन तय
चन्द्रचूड़ चान्यन पद्मपादन तय, पद्मपादन तय
मीठ़ दिमु शमु छुख त्र्यलोचन तय, त्र्यलोचन तय
बॉरव नाथु कर क्षय म्यान्यन पापन तय, म्यान्यन पापन तय

हे! अघोर नीलकंठ छुख हन हन तय, छुख हन हन तय।'(63)

हन्दी अनुवाद

'हे अघोर नीलकंठ! ज़ेर्र ज़ेर्र में व्याप्त हो, व्याप्त हो ज़ेर्र ज़ेर्र में
शिव रूप धारण किये वृषभासन पर, वृषभासन पर
चन्द्रचूड शिव तुम्हारे पद्म–चरणें पर, चरण–पद्मों पर
चूम लू, स्थिरचित्त त्रिलोचन हो, त्रिलोचन हो स्थिरचित्त
भैरव नाथ! मेरे पाप हर ले, हरले मेरे पाप
हे अघोर नीलकंठ! ज़ेर्र ज़ेर्र में व्याप्त हो, व्याप्त हो ज़ेर्र ज़ेर्र
(अणु अणु) में।

स्पष्ट है कि लोकरंग पण्डित कृष्ण राज़दान की लेखनी का मुख्याकर्षण रहा है। यहां लोक ही काव्य का पर्याय बन गया है। कश्मीरी गीति–काव्य के इतिहास में राज़दान साहब का अपना विशिष्ट स्थान है। डॉ॰ शशिशेखर तोषख़ानी के शब्दों में –'उन की एक अपनी शैली, अपना लहजा, अपनी अलग पहचान है जो उन्हें कश्मीरी भक्त–कवियों में सबसे बड़े गीतकार के रूप में स्थापित करती है। विद्यापति की भाँति शिव और कृष्ण दोनों उनकी आस्था अत: उनकी सृजनात्मकता के केन्द्र में रहे हैं।'(64)

निष्कर्ष

इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि स्वर्गीय पण्डित कृष्ण जू राज़दान कश्मीरी लीला और सगुण भक्ति काव्य के इतिहास में एक अभूतपूर्व प्रतिभा सम्पन्न भक्त एवं रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। बालसखा कृष्ण ने उन्हें विशेष रूप से मोह लिया था। यहाँ गिरिधारी अथवा तुंगीश की तुलना में घनश्याम का महत्त्व अधिक है। पुराणों में वर्णित कृष्ण जो आगे चलकर कृष्ण भक्तों का आलम्बन बन जाता है पण्डित जी की रचनाओं का मुख्याधार है। यहां भी ऐश्वर्यमय कृष्ण की तुलना में माधुर्यमय कृष्ण के प्रति कवि का विशिष्ट आकर्षण रहा है। भक्तों के अनुरंजन के हेतु कृष्ण का लोकरंजक रूप ही नाना लीलाओं के माध्यम से साकार हो उठा है। उन की रचनाओं का प्रमुखाधार है – ब्रजवासी लीलापरायण कृष्ण, नन्द, यशोदा, गोप और गोपी के प्रिय कृष्ण, राधा के कृष्ण, बाल सखा कृष्ण। कृष्ण राज़दान के सगुण भक्ति काव्य की सब से बड़ी विशेषता है उन की सचाई और सादगी। वे एक जन्मजात कवि थे। लोक जीवन के प्रति सचेत। लोक भाषा, लोक–शैली, लोक

वाद्य, लोक संगीत एवं लोक नृत्य – सब ने मिल कर उन के कृष्ण–काव्य को लोक मानस के साथ जोड़ दिया। उन के कृष्ण तो स्वयं उन्हीं के पर्याय हैं। केवल इस गूढ़ तथ्य को पहचानने की आवश्यकता है। 'शिव परिणय' में कथा–शैली और गीति शैली का अद्‌भुत सम्मिश्रण हुआ है। कथा की मुख्य धारा में असंख्य शिव लीलायें भी प्रवाहित हैं। मैं इस तथ्य की ओर पुनः पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि पण्डित कृष्ण राज़दान की दृष्टि में शिव और केशव एक हैं, दो नहीं –

–'हरस साँपुन हरी केशव बन्योव शिव
अद्वैत रूप नारायण प्रकट गव।'(65)

हिन्दी अनुवाद

हर हुए हरि केशव बने शिव
अद्वैत रूप में प्रकट हुए नारायण।'

देखा जाये तो उनकी विचार परिधि तथा चिन्तन क्षेत्र का केन्द्र बिन्दु शिव है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि कहीं भी उनका काव्य–व्यक्तित्व चिन्तन के भार से दब कर बोझिल नहीं हुआ है। यहाँ भक्ति को हृदय का सरस सहयोग प्राप्त हुआ है श्रद्धा में माधुर्य के कण घुलमिल गये हैं और ज्ञान के शुष्क रेगिस्तान में प्यार की स्रोतस्विनी प्रवाहित हो उठी है। कश्मीरी भाषा का कोई भी मर्मज्ञ साहित्यकार अथवा आलोचक कृष्ण जू राज़दान की सर्जनात्मक प्रतिभा की उपेक्षा नहीं कर सकता। आज कल कई संस्थायें कश्मीर के धन कमाऊ बेटों को कृष्ण जू पर लिखने के लिये ललचा रही हैं। वे कृष्ण जू की रचना क्षमताओं के साथ न्याय करें गे या अन्याय इस का निर्णय भविष्य के गर्भ में निहित है। आख़िर राजधानी में उड़ने वाले राजहंस भी मौक्तिक कणों की तलाश में पंखहीन उड़ान भरने की चेष्टा कर रहे हैं।

अन्तिम निवेदन यह है कि भले ही फ़ारसी भाषा के विद्वान आलोचक कृष्ण जू के रचना–संसार से अपना पल्ला झाडते रहें लेकिन कंचन को कहां तक कांच समझ कर ठुकराया जा सकता है। इतिहास करवट बदल रहा है और खुली किताब के पृष्ठ चिल्ला चिल्ला कर कह रहे हैं कि 'हमें पढ़ लो' यह न केंवल समय की पहचान है अपितु तुम्हारी अपनी सांस्कृतिक पहचान भी है।

पण्डित कृष्ण जू राज़दान एक दिव्य विभूति थे। सहृदय कवि और समर्पित भक्त।

सन्दर्भ-संकेत

1. देखिये 'कृष्ण वॉणी' — पण्डित कृष्ण जू राज़दान — सम्पादक — श्याम लाल राज़दान — पृ॰ XI
2. 'कृष्ण दर्शुन' — पण्डित कृष्ण जू राज़दान — सम्पादक — श्यामलाल राज़दान — पृ॰ IX
3. 'राज़दान साहब कश्मीर में शिव भक्ति के एकमात्र (?) प्रतिनिधि कवि हैं।... राज़दान साहब उस शिव के आशिक एवं भक्त है जो संसार स्रष्टा, रक्षक एवं क्षमाशील हैं। कृष्ण उस शिव से भिन्न नहीं अपितु वह शिव का ही विशिष्ट रूप है जिसे विष्णु कहते हैं।'

   'शीराज़ा' (कश्मीरी) — भाग 13 खण्ड — 1 सन् 1976 ई॰ 'शिव परिणय' — मोतीलील साक़ी — पृ॰—36
4. 'कुल्लियात राज़दान' — सम्पादक : सोमनाथ वीर— जम्मू कश्मीर कल्चरल अक़ादमी प्रकाशन, सन् 1984 ई॰—पृ॰ 363
5. वही — पृ॰ 268
6. 'क़श्मीरी ज़बान और शाइरी'—भाग—2 — अब्दुल अहद 'आज़ाद' कल्चरल अकादमी प्रकाशन — सन् 1962 ई॰—पृ॰ 428
7. 'शीराज़ा' (कश्मीरी) — खण्ड 13—भाग — 1 — सन् 1976 ई॰ 'शिव परिणय' — मोतीलाल साक़ी — पृ॰ 37
8. अग्निहोत्र — वैदिक मंत्रों के साथ अग्नि में आहुति देना, विवाह की साक्षीभूत अग्नि में नियमपूर्वक हवन करना। 'बृहत हिन्दी कोश' — ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, संस्करण वर्ष —2000, पृ॰ — 20
9. 'मननमाल' — कश्मीरी पण्डितों में विवाह के अवसर पर लग्न—मंडप पर दूल्हा के शीर्ष—पट पर एक विशेष माला बान्धी जाती है जिसे 'मननमाल' कहते हैं। इस अनुष्ठान का सम्बन्ध शिव के महान कर्मों की पुनः स्मृति अथवा मनन के साथ है।

   —लेखक
10. 'वनवुन' — कश्मीरी विवाह गीत को 'वनवुन' कहते हैं। यह मूलतः एक लोक गीत है।

    —लेखक
11. 'कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान' — पृ॰ 94-95

12. 'योजना' (संस्कृति विशेषांक, जनवरी 1960 ई०) प्रकाशक— सूचना—विभाग, जम्मू कश्मीर सरकार, जम्मू—लेख (कश्मीर का शैव दर्शन) —डॉ० बी०डी० शास्त्री—पृ—87
13. 'कुल्लियाति कृष्ण जू राज़दान'—पृ० 98
14. 'शैव—दर्शन का परम तत्त्व शिव है। उसे इस शास्त्र में सफल तथा निष्फल कहा है। ये दोनों शब्द क्रमशः सुगण तथा निर्गुण या साकार तथा निराकार के वाचक हैं। शैव दर्शन का शिवतत्त्व यद्यपि निर्गुण है पर उस की निर्गुणता में सगुणता अन्तर्निहित है। वेदान्त का परमतत्त्व ब्रह्म केवल निर्गुण ही है उस में सगुणता माया के सम्पर्क से आई है।'
'योजना' — संस्कृति विशेषांक—, जनवरी 1960 ई०— 'कश्मीर का शैव दर्शन' — डॉ० बी०डी० शास्त्री—पृ० 88
15. 'कुल्ल्यात कृष्ण जू राज़दान'— पृ० 155
16. 'शिव परिणय' में पार्वती के पिता के नाम हीमाल तथा माता का नाम मीना कहा गया है। वास्तव में ये नाम क्रमशः हिमालय / हिमवान तथा मैना / मेनका के तद्भव रूप हैं। पार्वती का मायके का नाम गौरी था।'
17. कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान—पृ०—151-152
18. वही —पृ 187
19. वही —पृ 239
20. वही —पृ० 246
21. वही —पृ० 338-340
22. —'वय—सर' एक झील का नाम —'कॉशिर डिकशनरी' भाग—7, कल्चरल अकादमी प्रकाशन—1979 ई० — पृ० 50
23. 'कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान' — पृ० 348
24. 'हिस्ट्री आफ कश्मीर' (अंग्रेज़ी) —पी०एन० कौल बामजई पृ० 250 — द्वितीय संस्करण—1973 ई० — मेट्रो पोलिटन बुक कम्पनी—दिल्ली—6
25. 'कश्मीर' (पत्रिका) — अक्टूबर 1950 ई० — 'मार्डन पीरियड आफ कश्मीर लिटरेचर—जे०एल०कौल—पृ० 230
26. 'कश्मीर'—दिसम्बर 1958 ई० — 'कृष्णा जू राज़दान'—बी०एल० कौल — पृ० 299
27. 'बृहत हिन्दी कोश'—ज्ञान मंडल लिमिटेड (वाराणसी पुनः मुद्रित संस्करण—2000, पृ० 991

28. 'हिन्दी साहित्य कोश' — भाग–1, ज्ञानमंडल लिमिटेड—वाराणसी, तृतीय संस्करण—1985 ई० — पृ० 744-745.
29. कॉशिर डिकशनरी—भाग—6 — कल्चर अकादमी प्रकाशन श्रीनगर — 1978 ई० — पृ० 72
30. 'कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान' — पृ० 358
31. वही —पृ० 266-267
32. वही —पृ० 208
33. वही —पृ० 211
34. 'चूस'—चूस शब्द मूलत: 'चूसना' क्रिया वाचक शब्द है। स्तन पान के लिये मैं ने 'चूस' शब्द का प्रयोग किया है।—लेखक
35. 'कुल्ल्यात कृष्ण जू राज़दान' —पृ० 393
36. वही —पृ० 398
37. वही —पृ० 515
38. 'कश्मीरी साहित्य का इतिहास' — डॉ० शशिशेखर तोषख़ानी — पृ० 194—195 कल्चरल अक़ादमी जम्मू प्रकाशन—1985 ई०
39. 'कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान' — पृ० 280
40. वही —पृ० 314
41. 'लो—लो' — कश्मीरी लोक गीतों की एक विधा — लोलो गीत। शृंगारपरक गीतों में अथवा लोक गीतों में प्रेम सम्बोधन। —लेखक
42. 'कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान' — पृ० 218-219
43. वही —पृ० 286-287
44. 'कश्मीरी साहित्य का इतिहास' — डॉ० शशिशेखर तोषख़ानी — पृ० 200
45. 'कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान'—पृ० 470-471
46. 'कश्मीरी ज़बान और शाइरी' — भाग—2, अब्दुल अहद आज़ाद, कल्चरल अकादमी प्रकाशन, श्रीनगर— सम्पादक— मुहम्मद यूसुफ टेंग —पृ० 428
47. 'कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान' — पृ० 363
48. वही —पृ० 118-119
49. वही —पृ० 236
50. वही —पृ० 217
51. वही —पृ० 141-142
52. वही —पृ० 129
53. वही —पृ० 254

54. 'कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान' — प्राक्कथन — श्री मुहम्मद यूसुफ टेंग — पृ॰ 4
55. 'शीराज़ा' (कश्मीरी) —कलचरल अकादमी पत्रिका — 1976 ई॰ 'शिव परिणाय' — मोतीलाल साकी — पृ॰ 40
56. 'कुल्लिात कृष्ण जू राज़दान' — पृ॰ 201
57. वही —पृ॰ 224
58. वही —पृ॰ 232
59. वही —पृ॰ 263
60. एक प्रसिद्ध कश्मीरी वाद्य यंत्र। इस का प्रयोग सर्वाधिक लोक गायन में होता है। इसे लोक—वाद्य कहना ही उचित होगा। इस को बजाने वाले कलाकार इसे दोनों हाथों की अंगुलियों से बजाते हैं और आनन्द—समाँ बान्ध कर अपने नैपुण्य से सब को मोहित कर देते हैं। —लेखक
61. 'मिट्टी का कलसा जिसे लोक वाद्य के रूप में तुम्बकनारी के साथ बजाया जाता है।
62. 'कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान' — पृ॰ 227
63. वही —पृ॰ 204
64. 'कश्मीरी साहित्य का इतिहास' — डॉ॰ शशिशेखर तोषखानी —पृ॰ 189
65. 'कुल्लियात कृष्ण जू राज़दान' — —पृ॰ 268

सहायक पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक सूची

1. 'कश्मीरी ज़बान और शायिरी' — भाग—2, अब्दुल अहद आज़ाद, प्रकाशक — जम्मू कश्मीर कैल्चरल अकादमी श्रीनगर सन् 1962 (फ़ारसी लिपि)
2. 'कॉशरि अदबुक तवॉरीख' — नाजी मुनॅवर, शफी शौक़ — प्रकाशक — कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय — श्रीनगर सन् 1978 ई० (नस्तालीक़ लिपि)
3. 'कश्मीरी साहित्य का इतिहास' — डॉ० शशिशेखर तोषख़ानी, प्रकाशक — जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी, जम्मू सन् 1985 ई० (देवनागरी लिपि)
4. 'कश्मीरी भाषा और साहित्य' — डॉ० शिबनकृष्ण रैणा — सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-7, सन् 1972 ई० (देवनागरी लिपि)
5. 'Studies in Kashmiri' - Prof. Jay Lal Koul, Kapoor Brothers, Srinagar Kashmir Publication 1968 A.D.
6. 'बृहत हिल्दी कोश' — ज्ञानमंडल लिमिटिड, वाराणसी 2000 ई० प्रकाशन
7. 'हिन्दी कथा—कोश' — हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद 1954 ई० (पौराणिक अन्तर्कथाओं का सन्दर्भ—ग्रन्थ)।
8. 'कुल्लियाति कृष्ण जू राज़दान' (कश्मीरी) — सम्पादक — सोमनाथ वीर, जम्मू कश्मीर कल्चरल आकादमी श्रीनगर प्रकाशन सन् 1984 ई०। (नस्तालीक़ लिपि)
9. 'कृष्णु दर्शुन' — सम्पादक श्यामलाल राज़दान — प्रकाशक ललिता स्टोर्स, शास्त्री नगर — जम्मू — सन् 1996 ई० — (देनागरी लिपि)
10. 'शिव लॅगुन' — सम्पादक श्यामलाल राज़दान — प्रकाशक — ललिता स्टोर्स, शास्त्री नगर — जम्मू सन् 1998 ई० — (देवनागरी लिपि)
11. 'कृष्णु वॉणी' — सम्पादक — श्यामलाल राज़दान प्रकाशक — ललिता स्टोर्स — शास्त्री नगर जम्मू सन् 2000 ई० — (देवनागरी लिपि)
12. 'श्रीमद्भगवद्गीता' — गीता प्रेस, गोरखपुर।

13. 'संगलाब' (काव्य संकलन — कश्मीरी) — सम्पादक : रहमान राही, शफ़ी शौक़, कॉशुर डिपार्टमेंट, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर — सन् 1983 ई० (नस्तालीक़ लिपि)
14. 'History of Kashmir' - P.N.K. Bamzai - Metroplitan Book Company (Pvt.) Ltd. Delhi-6, Second Edition 1973 A.D.
15. 'Kashmir - In Sun Light and Shade' - C.E Tyndale Biscoe (Seeley, London - 1922) reprinted by Sagar Publications - Ved Mansion Janpath, New Delhi-1, 1971 A.D.
16. 'शीराज़ा (कश्मीरी) — (साहित्यिक पत्रिका) — जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन श्रीनगर, भाग-13, खण्ड 1, सन् 1976 ई०
17. 'योजना' (संस्कृति विशेषांक, जनवरी 1960 ई०) प्रकाशक — सूचना विभाग, जम्मू कश्मीर सरकार, जम्मू — देवनागरी लिपि (पत्रिका का विशेषांक)
18. 'Our Spiritual Heritage' - 'Bhagavaan Gopinath Birth Centenary Volume' - 2000 A.D. - Printed at Thomson Press Delhi, Published by Bhagavaan Gopinath Trust, New Delhi.

संजीवनी शारदा केन्द्र का 'न्यासमण्डल'

1. श्री इन्द्रेश कुमार	संस्थापक न्यासी
2. डॉ॰ भूषणलाल कौल	संस्थापक न्यासी
3. स्वर्गीय श्री कुमार शर्माजी	संस्थापक न्यासी
4. श्री त्रिलोकीनाथ पण्डित	संस्थापक न्यासी
5. श्री त्रिलोकीनाथ शाला	न्यासी
6. श्री त्रिलोकीनाथ पेशिन	न्यासी
7. डॉ॰ रत्नलाल भट्ट	न्यासी
8. श्री हृदयनाथ पण्डित	न्यासी
9. श्री औतार कृष्ण त्रकरू	न्यासी
10. श्री द्वारिकानाथ रैणा	न्यासी

शारदाग्रंथमाला के अन्तर्गत
प्रकाशन—प्रभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

1. शारदा ग्रंथमाला—1 शारदा — गाँव, तीर्थ और अध्ययन केन्द्र
2. शारदा ग्रंथमाला—2 हेरथ
3. शारदा ग्रंथमाला—3 KSHEMENDRA
4. शारदा ग्रंथमाला—4 उमानगरी
5. शारदा ग्रंथमाला—5 परमानन्द

प्रकाशन योजना के अन्तर्गत मुद्रणार्थ अन्य पुस्तकें

1. श्री अमरनाथ तीर्थ
2. आनन्दवर्धन
3. ॲरनिमाल
4. अभिनवगुप्त
5. लल्लेश्वरी
6. ललितादित्य
7. सुच्या
8. शितिकण्ठ
9. श्री भट्ट
10. स्वामी राम
11. वसुगुप्त
12. लक्ष्मणजू
13. उत्पलदेव
14. प्रकाशराम
15. जोनराज
16. द्यदुरॉन्य
17. कल्हण
18. कोट्टरॉन्य
19. कश्यप बन्धु
20. रूपभवानी
22. प्रेमनाथ भट्ट
23. अवन्ती वर्मन

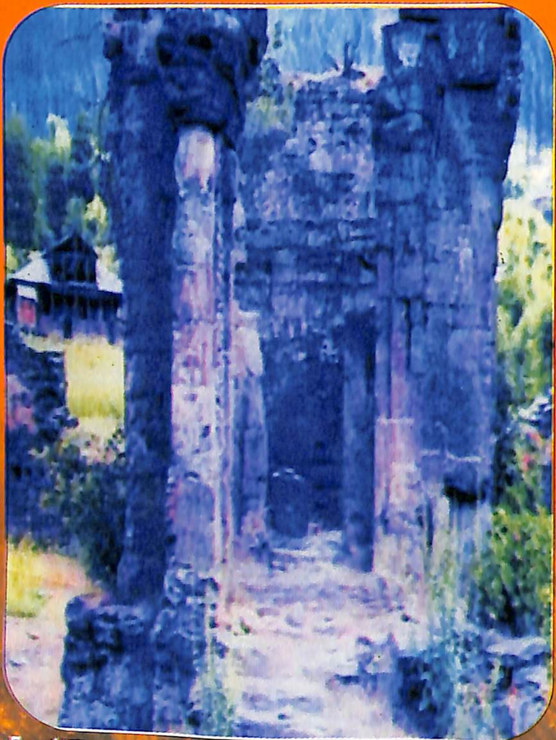

Ancient Temple of Goddess Sharda at Shardi (POK)

Printed at : M. K. Enterprises J. K. Colony Paloura Top, Jammu # 94191-87685